श्री उत्तराध्ययन सूत्र

।। श्री आगम-गुण-मञ्जूषा ।।

।। શ્રી આગમ-ગુણ-મંજૂષા ।।

।। Sri Agama Guna Manjusa ।।

(सचित्र)

प्रेरक-संपादक

अचलगच्छाधिपति प.पू.आ.भ.स्व. श्री गुणसागर सूरीश्वरजी म.सा.

४५ आगमो का संक्षिप्त परिचय

११ अंगसूत्र

१) **श्री आचारांग सूत्र :-** इस सूत्र मे साधु और श्रावक के उत्तम आचारो का सुंदर वर्णन है। इनके दो श्रुतस्कंध और कुल २५ अध्ययन है। द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, धर्मकथानुयोग और चरणकरणानुयोगोमे से मुख्य चौथा अनुयोग है। उपलब्ध श्लोको कि संख्या २५०० एवं दो चुलिका विद्यमान है।

२) **श्री सूत्रकृतांग सूत्र :-** श्री सुयगडांग नाम से भी प्रसिद्ध इस सूत्र मे दो श्रुतस्कंध और २३ अध्ययन के साथ कुलमिला के २००० श्लोक वर्तमान मे विद्यमान है। १८० क्रियावादी, ८४ अक्रियावादी, ६७ अज्ञानवादी अपरंच द्रव्यानुयोग इस आगम का मुख्य विषय रहा है।

३) **श्री स्थानांग सूत्र :-** इस सूत्र ने मुख्य गणितानुयोग से लेकर चारो अनुयोंगो कि बाते आती है। एक अंक से लेकर दस अंको तक मे कितनी वस्तुअें है इनका रोचक वर्णन है, ऐसे देखा जाय तो यह आगम की शैली विशिष्ट है और लगभग ७६०० श्लोक है।

४) **श्री समवायांग सूत्र :-** यह सूत्र भी ठाणांगसूत्र की भांति कराता है। यह भी संग्रहग्रंथ है। एक से सो तक कौन कौन सी चीजे है उनका उल्लेख है। सो के बाद देढसो, दोसो, तीनसो, चारसो, पांचसो और दोहजार से लेकर कोटाकोटी तक कौनसे कौनसे पदार्थ है उनका वर्णन है। यह आगमग्रंथ लगभग १६०० श्लोक प्रमाण मे उपलब्ध है।

५) **श्री व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र (भगवती सूत्र) :-** यह सबसे बडा सूत्र है, इसमे ४२ शतक है, इनमे भी उपविभाग है, १९२५ उद्देश है। इस आगमग्रंथ मे प्रभु महावीर के प्रथम शिष्य श्री गौतमस्वामी गणधरादि ने पुछे हुए प्रश्नो का प्रभु वीर ने समाधान किया है। प्रश्नोत्तर संकलन से इस ग्रंथ की रचना हुइ है। चारो अनुयोगो कि बाते अलग अलग शतको मे वर्णित है। अगर संक्षेप मे कहना हो तो श्री भगवतीसूत्र रत्नो का खजाना है। यह आगम १५००० से भी अधिक संकलित श्लोको मे उपलब्ध है।

६) **ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र :-** यह सूत्र धर्मकथानुयोग से है। पहले इसमे साडेतीन करोड कथाअे थी अब ६००० श्लोको मे उन्नीस कथाअें उपलब्ध है।

७) **श्री उपासकदशांग सूत्र :-** इसमें बाराह व्रतो का वर्णन आता है और १० महाश्रावको के जीवन चरित्र है, धर्मकथानुंयोग के साथ चरणकरणानुयोग भी इस सूत्र मे सामील है। इसमे ८०० से ज्यादा श्लोक है।

८) **श्री अन्तकृद्दशांग सूत्र :-** यह मुख्यत: धर्मकथानुयोग मे रचित है। इस सूत्र में श्री शत्रुंजयतीर्थ के उपर अनशन की आराधना करके मोक्ष मे जानेवाले उंत्तम जीवो के छोटे छोटे चरित्र दिए हुए है। फिलाल ८०० श्लोको मे ही ग्रंथ की समाप्ति हो जाती है।

९) **श्री अनुत्तरोपपातिक दशांग सूत्र :-** अंत समय मे चारित्र की आराधना करके अनुत्तर विमानवासी देव बनकर दूसरे भव मे फीर से चारित्र लेंकर मुक्तिपद को प्राप्त करने वाले महान् श्रावको के जीवनचरित्र है इसलीए मुख्यतया धर्मकथानुयोगवाला यह ग्रंथ २०० श्लोक प्रमाणका है।

१०) **श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र :-** इस सूत्र मे मुख्यविषय चरणकरणानुयोग है। इस आगम में देव-विद्याधर-साधु-साध्वी श्रावकादि ने पुछे हुए प्रश्नों का उत्तर प्रभु ने कैसे दिया इसका वर्णन है। जो नंदिसूत्र मे आश्रव-संवरद्वार है ठीक उसी तरह का वर्णन इस सूत्र मे भी है। कुलमिला के इसके २०० श्लोक है।

११) **श्री विपाक सूत्र :-** इस अंग मे २ श्रुतस्कंध है पहला दु:खविपाक और दूसरा सुखविपाक, पहेले में १० पापीओं के और दूसरे में १० धर्मीओ के द्रष्टांत है मुख्यतया धर्मकथानुयोग रहा है। १२०० श्लोक प्रमाण का यह अंगसूत्र है।

१२ उपांग सूत्र

१) **श्री औपपातिक सूत्र :-** यह आगम आचारांग सूत्र का उपांग है। इस मे चंपानगरी का वर्णन १२ प्रकार के तपों का विस्तार कोणिक का जुलुस अम्बडपरिव्राजक के ७०० शिष्यो की बाते है। १५०० श्लोक प्रमाण का यह ग्रंथ है।

२) **श्री राजप्रश्नीय सूत्र :-** यह आगम सुयगडांगसूत्र का उपांग है। इसमें प्रदेशीराजा का अधिकार सूर्याभदेव के जरीए जिनप्रतिमाओं की पूजा का वर्णन है। २००० श्लोको से भी अधिक प्रमाण का ग्रंथ है।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३) **श्री जीवाजीवाभिगम सूत्र :-** यह ठाणांगसूत्र का उपांग है। जीव और अजीव के बारे मे अच्छा विश्लेषण किया है। इसके अलावा जम्बुद्विप की जगती एवं विजयदेव ने कि हुइ पूजा की विधि सविस्तर बताइ है। फिलाल जिज्ञासु ४ प्रकरण, क्षेत्रसमासादि जो पढते है वह सभी ग्रंथे जीवाभिगम अपरन्च पन्नवणासूत्र के ही पदार्थ है। यह आगम सूत्र ४७०० श्लोक प्रमाण का है।

४) **श्री प्रज्ञापना सूत्र-** यह आगम समवायांग सूत्र का उपांग है। इसमे ३६ पदो का वर्णन है। प्राय: ८००० श्लोक प्रमाण का यह सूत्र है।

५) **श्री सुर्यप्रज्ञप्ति सूत्र :-**

६) **श्री चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र :-** इस दो आगमो मे गणितानुयोग मुख्य विषय रहा है। सूर्य, चन्द्र, ग्रहादि की गति, दिनमान ऋतु अयनादि का वर्णन है, दोनो आगमो मे २२००, २२०० श्लोक है।

७) **श्री जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र :-** यह आगम भी अगले दो आगमों की तरह गणितानुयोग मे है। यह ग्रंथ नाम के मुताबित जंबूद्विप का सविस्तर वर्णन है। ६ आरे के स्वरूप बताया है। ४५०० श्लोक प्रमाण का यह ग्रंथ है।

८) **श्री निरयावली सूत्र :-** इन आगम ग्रंथो में हाथी और हारादि के कारण नानाजी का दोहित्र के साथ जो भयंकर युद्ध हुआ उस मे श्रेणिक राजा के १० पुत्र मरकर नरक मे गये उसका वर्णन है।

९) **श्री कल्पावतंसक सूत्र :-** इसमें पद्मकुमार और श्रेणिकपुत्र कालकुमार इत्यादि १० भाइओं के १० पुत्रों का जीवन चरित्र है।

१०) **श्री पुष्पिका उपांग सूत्र :-** इसमें १० अध्ययन है। चन्द्र, सूर्य, शुक्र, बहुपुत्रिका देवी, पूर्णभद्र, माणिभद्र, दत्त, शील, जल, अणाढ्य श्रावक के अधिकार है।

११) **श्री पुष्पचुलीका सूत्र :-** इसमें श्रीदेवी आदि १० देवीओ का पूर्वभव का वर्णन है।

१२) **श्री वृष्णिदशा सूत्र :-** यादववंश के राजा अंधकवृष्णि के समुद्रादि १०पुत्र, १० मे पुत्र वासुदेव के पुत्र बलभद्रजी, निषधकुमार इत्यादि १२ कथाएं है। अंतके पांचो उपांगो को निरियावली पन्चक भी कहते है।

दश प्रकीर्णक सूत्र

१) **श्री चतुशरण प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में अरिहन्त, सिद्ध, साधु और गच्छधर्म के आचार के स्वरूप का वर्णन एवं चारों शरण की स्वीकृति है।

२) **श्री आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्णक सूत्र :-** इस आगम का विषय है अंतिम आराधना और मृत्युसुधार

३) **श्री भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में पंडित मृत्यु के तीन प्रकार (१) भक्त परिज्ञा मरण (२) इंगिनी मरण (३) पादोपगमन मरण इत्यादि का वर्णन है।

६) **श्री संस्तारक प्रकीर्णक सूत्र :-** नामानुसार इस पयन्ने में संथारा की महिमा का वर्णन है। इन चारों पयन्ने पठन के अधिकारी श्रावक भी है।

७) **श्री तंदुल वैचारिक प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने को पूर्वाचार्यगण वैराग्य रस के समुद्र के नाम से चीन्हित करते है। १०० वर्षो में जीवात्मा कितना खानपान करे इसकी विस्तृत जानकारी दी गई है। धर्म की आराधना ही मानव मन की सफलता है। ऐसी बातों से गुंफित यह वैराग्यमय कृति है।

८) **श्री चन्दाविजय प्रकीर्णक सूत्र :-** मृत्यु सुधार हेतु कैसी आराधना हो इसे इस पयन्ने में समजाया गया है।

९) **श्री देवेन्द्र-स्तव प्रकीर्णक सूत्र :-** इन्द्र द्वारा परमात्मा की स्तुति एवं इन्द्र संबधित अन्य बातों का वर्णन है।

१०A) **श्री मरणसमाधि प्रकीर्णक सूत्र :-** मृत्यु संबधित आठ प्रकरणों के सार एवं अंतिम आराधना का विस्तृत वर्णन इस पयन्ने में है।

१०B) **श्री महाप्रत्याख्यान प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में साधु के अंतिम समय में किए जाने योग्य पयन्ना एवं विविध आत्महितकारी उपयोगी बातों का विस्तृत वर्णन हे।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०C) **श्री गणिविद्या प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयत्रे में ज्योतिष संबधित बड़े ग्रंथो का सार है।

उपरोक्त दसों पयन्नों का परिमाण लगभग २५०० श्लोकों में बध्य हे। इसके अलावा २२ अन्य पयन्ना भी उपलब्ध हैं। और दस पयन्नों में चंदाविजय पयन्नो के स्थान पर गच्छाचार पयन्ना को गिनते हैं।

छह छेद सूत्र

(१) निशिथ सूत्र (२) महानिशिथ सूत्र (३) व्यवहार सूत्र (४) जीतकल्प सूत्र (५) पंचकल्प सूत्र (६) दशा श्रुतस्कंध सूत्र

इन छेद सूत्र ग्रन्थों में उत्सर्ग, अपवाद और आलोचना की गंभीर चर्चा है। अति गंभीर केवल आत्मार्थ, भवभीरू, संयम में परिणत, जयणावंत, सूक्ष्म दष्टि से द्रव्यक्षेत्रादिक विचार धर्मदष्टि से करने वाले, प्रतिपल छहकाया के जीवों की रक्षा हेतु चिंतन करने वाले, गीतार्थ, परंपरागत उत्तम साधु, समाचारी पालक, सर्वजीवो के सच्चे हित की चिंता करने वाले ऐसे उत्तम मुनिवर जिन्होंने गुरु महाराज की निश्रा में योगद्वहन इत्यादि करके विशेष योग्यता अर्जित की हो ऐसे मुनिवरों को ही इन ग्रन्थों के अध्ययन पठन का अधिकार है।

चार मूल सूत्र

१) **श्री दशवैकालिक सूत्र :-** पंचम काल के साधु साध्वीओं के लिए यह आगमग्रन्थ अमृत सरोवर सरीखा है। इसमें दश अध्ययन हैं तथा अन्त में दो चूलिकाए रतिवाक्या व, विविक्त चरिया नाम से दी हैं। इन चूलिकाओं के बारे में कहा जाता है कि श्री स्थूलभद्रस्वामी की बहन यक्षासाध्वीजी महाविदेहक्षेत्र में से श्री सीमंधर स्वामी से चार चूलिकाए लाइ थी। उनमें से दो चूलिकाएं इस ग्रंथ में दी हैं। यह आगम ७०० श्लोक प्रमाण का है।

२) **श्री उत्तराध्ययन सूत्र :-** परम कृपालु श्री महावीरभगवान के अंतिम समय के उपदेश इस सूत्र में हैं। वैराग्य की बातें और मुनिवरों के उच्च आचारों का वर्णन इस आगम ग्रंथ में ३६ अध्ययनों में लगभग २००० श्लोकों द्वारा प्रस्तुत हें।

३) **श्री निर्युक्ति सूत्र :-** चरण सत्तरी-करण सत्तरी इत्यादि का वर्णन इस आगम ग्रन्थ में है। पिंडनिर्युक्ति भी कई लोग ओघ निर्युक्ति के साथ मानते हैं अन्य कई लोग इसे अलग आगम की मान्यता देते हैं। पिंडनिर्युक्ति में आहार प्राप्ति की रीत बताइ हें। ४२ दोष कैसे दूर हों और आहार करने के छह कारण और आहार न करने के छह कारण इत्यादि बातें हैं।

४) **श्री आवश्यक सूत्र :-** छह अध्ययन के इस सूत्र का उपयोग चतुर्विध संघ में छोट बडे सभी को है। प्रत्येक साधु साध्वी, श्रावक-श्राविका के द्वारा अवश्य प्रतिदिन प्रात: एवं सायं करने योग्य क्रिया (प्रतिक्रमण आवश्यक) इस प्रकार हैं :-

(१) सामायिक (२) चतुर्विंशति (३) वंदन (४) प्रतिक्रमण (५) कार्योत्सर्ग (६) पच्चक्खाण

दो चूलिकाए

१) **श्री नंदी सूत्र :-** ७०० श्लोक के इस आगम ग्रंन्थ में परमात्मा महावीर की स्तुति, संघ की अनेक उपमाए, २४ तीर्थंकरों के नाम ग्यारह गणधरों के नाम, स्थविरावली और पांच ज्ञान का विस्तृत वर्णन है।

२) **श्री अनुयोगद्वार सूत्र :-** २००० श्लोकों के इस ग्रन्थ में निश्चय एवं व्यवहार के आलंबन द्वारा आराधना के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी गइ है। अनुयोग याने शास्त्र की व्याख्या जिसके चार द्वार है (१) उक्रम (२) निक्षेप (३) अनुगम (४) नय

यह आगम सब आगमों की चावी है। आगम पढने वाले को प्रथम इस आगम से शुरुआत करनी पडती है। यह आगम मुखपाठ करने जैसा है।

॥ इति शम् ॥

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Introduction

45 *Āgamas*, a short sketch

I Eleven *Aṅgas* :

(1) **Ācārāṅga-sūtra :** It deals with the religious conduct of the monks and the Jain householders. It consists of 02 Parts of learning, 25 lessons and among the four teachings on entity, calculation, religious discourse and the ways of conduct, the teaching of the ways of conduct is the main topic here. The Āgama is of the size of 2500 *Ślokas*.

(2) **Sūyagaḍāṅga-sūtra :** It is also known as Sūtra-Kṛtāṅga. It's two parts of learning consist of 23 lessons. It discusses at length views of 363 doctrine-holders. Among them are 180 ritualists, 84 non-ritualists, 67 agnostics and 32 restraint-propounders, though it's main area of discussion is the teaching of entity. It is available in the size of 2000 *Ślokas*.

(3) **Ṭhāṇāṅga-sūtra :** It begins with the teaching of calculation mainly and discusses other three teachings subordinately. It introduces the topic of one dealing with the single objects and ends with the topic of eight objects. It is of the size of 7600 *Ślokas*.

(4) **Samavāyāṅga-sūtra :** This is an encompendium, introducing 01 to 100 objects, then 150, 200 to 500 and 2000 to crores and crores of objects. It contains the text of size of 1600 *Ślokas*.

(5) **Vyākhyā-prajñapti-sūtra :** It is also known as Bhagavatī-sūtra. It is the largest of all the *Aṅgas*. It contains 41 centuries with subsections. It consists of 1925 topics. It depicts the questions of Gautama *Gaṇadhara* and answers of Lord Mahāvīra. It discusses the four teachings in the centuries. This *Āgama* is really a treasure of gems. It is of the size of more than 15000 *Ślokas*.

(6) **Jñātādharma-Kathāṅga-sūtra :** It is of the form of the teaching of the religious discourses. Previously it contained three and a half crores of discourses, but at present there are 19 religious discourses. It is of the size of 6000 *Ślokas*.

(7) **Upāsaka-daśāṅga-sūtra :** It deals with 12 vows, life-sketches of 10 great Jain householders and of Lord Mahāvīra, too. This deals with the teaching of the religious discourses and the ways of conduct. It is of the size of around 800 *Ślokas*.

(8) **Antagaḍa-daśāṅga-sūtra :** It deals mainly with the teaching of the religious discourses. It contains brief life-sketches of the highly spiritual souls who are born to liberate and those who are liberating ones : they are Andhaka Vṛṣṇi, Gautama and other 9 sons of queen Dhāriṇī, 8 princes like Akṣobhakumāra, 6 sons of Devaki, Gajasukumāra, Yādava princes like Jāli, Mayālī, Vasudeva Kṛṣṇa, 8 queens like Rukmiṇī. It is available of the size of 800 *Ślokas*.

(9) **Anuttarovavāyi-daśāṅga-sūtra :** It deals with the teaching of the religious discourses. It contains the life-sketches of those who practise the path of religious conduct, reach the *Anuttara Vimāna*, from there they drop in this world and attain Liberation in the next birth. Such souls are Abhayakumāra and other 9 princes of king Śrenika, Dīrghasena and other 11 sons, Dhannā *Aṇagāra*, etc. It is of the size of 200 *Ślokas*.

(10) **Praśna-vyākaraṇa-sūtra :** It deals mainly with the teaching of the ways of conduct. As per the remark of the Nandī-sūtra, it contained previously Lord Mahāvīra's answers to the questions put by gods, Vidyādharas, monks, nuns and the Jain householders. At present it contains the description of the ways leading to transgression and the self-control. It is of the size of 200 *Ślokas*.

(11) **Vipāka-sūtrāṅga-sūtra :** It consists of 2 parts of learning. The first part is called the Fruition of miseries and depicts the life of 10 sinful souls, while the second part called the Fruition of happiness narrates illustrations of 10 meritorious souls. It is available of the size of 1200 *Ślokas*.

II Twelve *Upāṅgas*

(1) **Uvavāyi-sūtra :** It is a subservient text to the *Ācārāṅga-sūtra*. It deals with the description of Campā city, 12 types of austerity, procession-arrival of Koṇika's marriage, 700 disciples of the monk Ambaḍa. It is of the size of 1000 *Ślokas*.

(2) **Rāyapaseṇī-sūtra :** It is a subservient text to Sūyagaḍāṅga-sūtra. It depicts king Pradesī's jurisdiction, god Sūryābha worshipping the Jina idols, etc. It is of the size of 2000 *Ślokas*.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(3) **Jīvābhigama-sūtra :** It is a subservient text to Ṭhāṇāṅga-sūtra. It deals with the wisdom regarding the self and the non-self, the Jambū continent and its areas, etc. and the detailed description of the veneration offered by god Vijaya. The four chapters on areas, society, etc. published recently are composed on the line of the topics of this *Sūtra* and of the Pannāvaṇā-sūtra. It is of the size of 4700 *Ślokas*.

(4) **Pannāvaṇā-sūtra :** It is a subservient text to the Samavāyāṅga-sūtra. It describes 36 steps or topics and it is of the size of 8000 *Ślokas*.

(5) **Sūrya-prajñapti-sūtra** and

(6) **Candra-prajñapti-sūtra :** These two falls under the teaching of the calculation. They depict the solar and the lunar transit, the movement of planets, the variations in the length of a day, seasons, northward and the southward solstices, etc. Each one of these *Āgamas* are of the size of 2200 *Ślokas*.

(7) **Jambūdvīpa-prajñapti-sūtra :** It mainly deals with the teaching of the calculations. As it's name indicates, it describes at length the objects of the Jambū continent, the form and nature of 06 corners (*āra*). It is available in the size of 4500 *Ślokas*.

Nirayāvalī-pañcaka :

(8) **Nirayāvalī-sūtra :** It depicts the war between the grandfather and the daughter's son, caused of a necklace and the elephant, the death of king Ceṭika's 10 sons who attained hell after death. This war is designated as the most dreadful war of the Downward (*avasarpiṇī*) age.

(9) **Kalpāvataṁsaka-sūtra :** It deals with the life-sketches of Kālakumara and other 09 princes of king Śreṇika, the life-sketch of Padamakumara and others.

(10) **Pupphiyā-upāṅga-sūtra :** It consists of 10 lessons that covers the topics of the Moon-god, Sun-god, Venus, queen Bahuputrikā, Pūrṇabhadra, Maṇibhadra, Datta, Śila, Bala and Aṇāḍḍhiya.

(11) **Pupphaculīya-upāṅga-sūtra :** It depicts previous births of the 10 queens like Śrīdevī and others.

(12) **Vahnidaśā-upāṅga sūtra :** It contains 10 stories of Yadu king Andhakavṛṣṇi, his 10 princes named Samudra and others, the tenth one Vāsudeva, his son Balabhadra and his son Niṣaḍha.

III Ten *Payannā-sūtras* :

(1) **Āurapaccakhāṇa-sūtra :** It deals with the final religious practice and the way of improving (the life so that the) death (may be improved).

(2) **Bhattaparinnā-sūtra :** It describes (1) three types of *Paṇḍita* death, (2) knowledge, (3) Iṅgini devotee (4) *Pādapopagamana*, etc.

(4) **Santhāraga-payannā-sūtra :** It extols the *Saṁstāraka*.

**** These four payannās can also be learnt and recited by the Jain householders. ****

(5) **Tandula-viyāliya-payannā-sūtra :** The ancient preceptors call this Payannā-sūtra as an ocean of the sentiment of detachment. It describes what amount of food an individual soul will eat in his life of 100 years, the human life can be justified by way of practising a religious life.

(6) **Candāvijaya-payannā-sūtra :** It mainly deals with the religious practice that improves one's death.

(7) **Devendrathui-payannā-sūtra :** It presents the hymns to the Lord sung by Indras and also furnishes important details on those Indras.

(8) **Maraṇasamādhi-payannā-sūtra :** It describes at length the final religious practice and gives the summary of the 08 chapters dealing with death.

(9) **Mahāpaccakhāṇa-payannā-sūtra :** It deals specially with what a monk should practise at the time of death and gives various beneficial informations.

(10) **Gaṇivijaya-payannā-sūtra :** It gives the summary of some treatise on astrology.

These 10 Payannās are of the size of 2500 *Ślokas*.

Besides about 22 Payannās are known and even for these above 10 also there is a difference of opinion about their names. The Gacchācāra is taken, by some, in place of the Candāvijaya of the 10 Payannās.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

IV Six *Cheda-sūtras*

(1) Vyavahāra-sūtra, (2) Nisītha-sūtra,
(3) Mahānisītha-sūtra, (4) Pancakalpa-sūtra,
(5) Daśāśruta-skandha-sūtra and (6) Bṛhatkalpa-sūtra.

These Chedasūtras deal with the rules, exceptions and vows.

The study of these is restricted only to those best monks who are (1) serene, (2) introvert, (3) fearing from the worldly existence, (4) exalted in restraint, (5) self-controlled, (6) rightfully descerning the subtlety of entity, territories, etc. (7) pondering over continuously the protection of the six-limbed souls, (8) praiseworthy, (9) exalted in keeping the tradition, (10) observing good religious conduct, (11) beneficial to all the beings and (12) Who have paved the path of Yoga under the guidance of their master.

V Four *Mūlasūtras*

(1) **Daśavaikālika-sūtra :** It is compared with a lake of nectar for the monks and nuns established in the fifth stage. It consists of 10 lessons and ends with 02 Cūlikās called Rativākyā and Vivittacariyā. It is said that monk Sthūlabhadra's sister nun Yakṣā approached Simandhara Svāmī in the Mahāvideha region and received four Cūlikās. Here are incorporated two of them.

(2) **Uttarādhyayana-sūtra :** It incorporates the last sermons of Lord Mahāvīra. In 36 lessons it describes detachment, the conduct of monks and so on. It is available in the size of 2000 *Slokas*.

(3) **Anuyogadvāra-sūtra :** It discusses 17 topics on conduct, behaviour, etc. Some combine Piṇḍaniryukti with it, while others take it as a separate *Āgama*. Piṇḍaniryukti deals with the method of receiving food (*bhikṣā* or *gocarī*), avoidance of 42 faults and to receive food, 06 reasons of taking food, 06 reasons for avoiding food, etc.

(4) **Āvaśyaka-sūtra :** It is the most useful *Āgama* for all the four groups of the Jain religious constituency. It consists of 06 lessons. It describes 06 obligatory duties of monks, nuns, house-holders and housewives. They are : (1) *Sāmāyika*, (2) *Caturviṁśatistava*, (3) *Vandanā*, (4) *Pratikramaṇa*, (5) Kāyotsarga and (6) *Paccakhāṇa*.

VI Two *Cūlikās*

(1) **Nandī-sūtra :** It contains hymn to Lord Mahāvīra, numerous similies for the religious constituency, name-list of 24 *Tīrthaṅkaras* and 11 *Gaṇadharas*, list of *Sthaviras* and the fivefold knowledge. It is available in the size of around 700 *Ślokas*.

(2) **Anuyogadvāra-sūtra :** Though it comes last in the serial order of the 45 *Āgamas*, the learner needs it first. It is designated as the key to all the *Āgamas*. The term *Anuyoga* means explanatory device which is of four types : (1) Statement of proposition to be proved, (2) logical argument, (3) statement of accordance and (4) conclusion.

It teaches to pave the righteous path with the support of firm resolve and wordly involvements.

It is of the size of 2000 *Ślokas*.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

આગમ - ૪૨

સર્વાનુયોગમય ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર - ૪૨

અધ્યયન	૩૬	
ઉપલબ્ધ મૂલપાઠ	૨૧૦૦	શ્લોક પ્રમાણ
પદ્યસૂત્ર	૧૬૫૬	
ગદ્યસૂત્ર	૮૯	

૩૬ અધ્યયનોનાં નામ

૧. વિનયશ્રુત	૧૯. મૃગાપુત્રીય
૨. પરિષહ ★	૨૦. મહાનિર્ગ્રંથીય
૩. ચાતુરંગીય	૨૧. સમુદ્રપાલીય
૪. અસંસ્કૃત/પ્રમાદાપ્રમાદ	૨૨. રહનેમીય
૫. અકામ મરણ	૨૩. કેશી-ગૌતમીય
૬. ક્ષુલ્લક નિર્ગ્રંથીય/પુરુષવિદ્યા ★	૨૪. સમિતિ
૭. ઔરભ્રીય	૨૫. યજ્ઞીય
૮. કાપિલીય	૨૬. સમાચારી
૯. નમિ-પ્રવ્રજ્યા	૨૭. ખલુંકીય
૧૦. દ્રુમ-પત્રક	૨૮. મોક્ષમાર્ગ ગતિ
૧૧. બહુશ્રુત પૂજ્ય	૨૯. સમ્યક્ત્વ-પરાક્રમ ★
૧૨. હરિકેશીય	૩૦. તપમાર્ગ
૧૩. ચિત્તસંભૂતીય	૩૧. ચરણ-વિધિ
૧૪. ઈષુકારીય	૩૨. પ્રમાદસ્થાન
૧૫. સભિક્ષુ	૩૩. કર્મ-પ્રકૃતિ
૧૬. બ્રહ્મચર્ય સમાધિ ★	૩૪. લેશ્યા વર્ણન
૧૭. પાપશ્રમણીય	૩૫. અણગાર
૧૮. સંયતીય	૩૬. જીવાજીવવિભક્તિ

★ ૨-૬-૧૬-૨૯ અધ્યયનોમાં અનુક્રમે ૪-૧-૧૦-૭૪ ગદ્યસૂત્રો પણ છે. બાકીનામાં પદ્યસૂત્રો જ છે.

(૧) અધ્યયન : વિનય

આમાં વિનીત-અવિનીતના લક્ષણ, વિનીતને અશ્વની અને અવિનીતને અડિયલ ટટ્ટુની ઉપમા તેમજ આત્મ-દમન-નિગ્રહનો ઉપદેશ, ભાષા તથા ગવેષણા, ગ્રહણૈષણા અને ગ્રાસૈષણા સંબંધી વિવેક અને અંતે વિનયની સર્વત્ર પ્રશંસા થાય છે એ કથનથી ઉપસંહાર કરવામાં આવ્યો છે.

(૨) અધ્યયન : પરિષહ

આમાં ભગવાન મહાવીર દ્વારા ક્ષુધા (ભૂખ), પિપાસા (તરસ), શીત, ઉષ્ણ વગેરે ૨૨ પરિષહોના વર્ણન કરીને તે સહન કરવા પ્રેરણા કરી છે.

(૩) અધ્યયન : ચાતુરંગીય

આમાં (૧) મનુષ્યભવ, (૨) શ્રુતિ(ધર્મ-શ્રવણ), (૩) શ્રદ્ધા અને (૪) વીર્ય(આચરણ) એ ચાર અંગોની દુર્લભતા અને તે ચાર અંગોની પ્રાપ્તિથી આ લોક અને પરલોકના ફળ અને સિદ્ધગતિ થાય છે તેનું વર્ણન છે.

(૪) અધ્યયન : અસંસ્કૃત / પ્રમાદાપ્રમાદ

આમાં પ્રમાદના ઉપદેશમાં ચોર અને દીપકનું ઉદાહરણ તેમજ અપ્રમાદના ઉદાહરણમાં ભારંડ પક્ષીનું ઉદાહરણ આપીને રાગ-દ્વેષ કષાયની નિવૃત્તિ અને સમભાવ-સાધનાનો ઉપદેશ છે.

(૫) અધ્યયન : અકામ-મરણ

આમાં મરણ-વિષયક પ્રશ્નો, મરણના બાલ-મરણ તેમજ પંડિત-મરણ એમ બે પ્રકારો બતાવીને અળશિયાનું, ગાડાવાળા (શાકટિક)નું તેમજ જુગારી (ધૂતકાર)નું એમ ત્રણ ઉદાહરણો આપીને બાલ-વ્યક્તિઓના અકામ-મરણ તેમજ સંયમીઓનું પંડિત-મરણ બતાવ્યાં છે. ગૃહસ્થ અને ભિક્ષુની પ્રકારાનુસાર મરણ-ગતિ બતાવીને અંતે પંડિતોના ત્રણ સકામ-મરણની વાત કરી છે.

(૬) અધ્યયન : ક્ષુલ્લક નિર્ગ્રંથ / પુરુષવિદ્યા

આમાં અજ્ઞાનીઓનું દુઃખમય જીવન, મૈત્રી-ભાવના, અશરણ ભાવના, હિંસા અને અદત્તાદાન (ચોરી)નો નિષેધ તેમજ પક્ષીનું ઉદાહરણ આપીને ગવેષણાનો ઉપદેશ છે.

(૭) અધ્યયન : ઔરભ્રીય

આમાં મહેમાનોના નિમિત્તે પાળવામાં આવતા ઘેટાંનું ઉદાહરણ તેમજ કાકિણી, આમ્ર (કેરી), ત્રણ વાણિયા અને સમુદ્રના ઉદાહરણ, દેવો અને મનુષ્યોના કામ-ભોગોની તુલના તેમજ ધર્મ અધર્મની તુલના આપવામાં આવી છે.

(૮) અધ્યયન : કાપિલીય

આમાં ભિક્ષુના લક્ષણ, દુર્ગતિ રોકવાના ઉપાયની જિજ્ઞાસા, તેમજ માખી, સાંયાત્રિક અને પાણીના પ્રવાહના ઉદાહરણો, કપિલનું આખ્યાન અને અંતે ધર્મઆરાધકોની ઉભય લોક-આરાધનાનું વર્ણન છે.

(૯) અધ્યયન : નમિ-પ્રવ્રજ્યા

આમાં નમિ-રાજાનું જાતિસ્મરણ, એનો ગૃહત્યાગ, બ્રાહ્મણરૂપે શક્રેન્દ્ર દ્વારા નગરજનો, રાણીઓ વગેરે પર ધ્યાન દેવાની પ્રાર્થના, નમિ-રાજાના સચોટ ઉત્તરો, ઈન્દ્રનું પ્રાકટ્ય, નમિ-રાજાની પ્રવ્રજ્યા વર્ણવીને અંતે પ્રબુદ્ધ પુરુષોએ નમિ-રાજાની માફક ભોગોમાંથી નિવૃત્તિ લેવી એવો ઉપદેશ છે.

(૧૦) અધ્યયન : દ્રુમ-પત્રક

આમાં મનુષ્ય જીવનને ઝાડના પાનની અને કુશ-ઘાસની ટોચે ચોંટેલા પાણીના ટીપાની ઉપમા આપીને મનુષ્ય જીવનની દુર્લભતા બતાવી છે. પૂર્વકર્મોની રજ દૂર કરવાનો ઉપદેશ તેમજ શરદ્ ઋતુના કમળ, માર્ગ, ભારવાહક અને સમુદ્ર-તટના ઉદાહરણો આપીને અંતે રાગ-દ્વેષનો ક્ષય કરવાનો ઉપદેશ છે.

(૧૧) અધ્યયન : બહુશ્રુત-પૂજ્ય

આમાં અણગારના આચાર-કથનની પ્રતિજ્ઞા કરીને અવિનીત તેમજ જિજ્ઞાસુના લક્ષણ, જિજ્ઞાસુના પાંચ દોષ અને આઠ ગુણ બતાવને યોગ્ય જિજ્ઞાસુનું લક્ષણ આપવામાં આવ્યું છે. તે યોગ્ય જિજ્ઞાસુ - બહુશ્રુતને શંખનું જળ, અશ્વ, અશ્વારોહી વીર વગેરે જુદા જુદા ૧૭ ઉપમાન - વસ્તુઓ સાથે સરખાવી અંતે શ્રુતના અધ્યયનથી શિવપદ મળે છે એવો ઉપદેશ છે.

(૧૨) અધ્યયન : હરિકેશીય

આમાં ચંડાળકુળમાં જન્મેલો હરિકેશી શ્રમણ ભિક્ષા લેવા બ્રહ્મયજ્ઞમાં જાય છે અને ત્યાં બ્રાહ્મણો દ્વારા અનાદર પામે છે, તિંદુક યક્ષનો કોપ અને બ્રહ્મકુમારોની દુર્દશા, યજ્ઞ-પ્રમુખ દ્વારા ક્ષમાયાચના અને હરિકેશીને ભિક્ષાદાન અને અંતે હરિકેશી દ્વારા અધ્યાત્મસ્નાન અને અધ્યાત્મ યજ્ઞનું પ્રતિપાદન છે.

(૧૩) અધ્યયન : ચિત્ત-સંભૂતિ

આમાં પુરિમતાલમાં જન્મેલા ચિત્ત અને સંભૂતિની હસ્તિનાપુરથી ચ્યવન પછી કાંપિલ્યપુરની રાણી ચુલિની દેવીમાં જન્મેલા બ્રહ્મદત્તનું મિલન, ચિત્તદ્વારા અશરણ ભાવનાનો ઉપદેશ અને આર્ય કર્મોની પ્રેરણા, કાદવમાં ફસાયેલા હાથીની જેમ બ્રહ્મદત્તની ભોગોમાં આસક્તિ અને તેને લીધે મૃત્યુ પછી નરકમાં ઉત્પત્તિ અને ચિત્તને મુક્તિ વગેરે વર્ણન છે.

(૧૪) અધ્યયન : ઈષુકારીય

આમાં રાજા ઈષુકુમાર અને રાણી કમલાવતી તેમજ પુરોહિત ભૃગુ અને તેની પત્ની જસા, તેમના બે પુત્રો મળી કુલે છ જણાનો પુરોહિતના પુત્રો તરીકેનો બીજો ભવ, તેમાં પૂર્વભવ-સ્મરણ અને પિતાને પ્રવ્રજ્યા માટે અનુમતિ- યાચના, પિતા-પુત્રોનો ગૃહસ્થ જીવન, આત્મા વગેરે વિષય પર ચર્ચાને અંતે છ જણા દ્વારા દીક્ષા ગ્રહણ વગેરે વર્ણન છે.

(૧૫) અધ્યયન : સ ભિક્ષુ

આમાં ભિક્ષુના લક્ષણ તેમજ નિયાણું, પ્રશંસા, કામ-ભોગોની ચાહના, એષણા વગેરેના નિષેધ, વિરક્તિ, અનાસક્તિ અને અત્યલ્પ સાધનો રાખવાના વિધિ વગેરે જેવા વિધિનિષેધો આપવામાં આવ્યા છે.

(૧૬) અધ્યયન : બ્રહ્મચર્ય-સમાધિ

આમાં ભગવાન મહાવીર દ્વારા બ્રહ્મચર્ય-સમાધિના સ્ત્રી-વિષયક પાંચ, ભોગ-વિષયક ચાર અને મનોજ્ઞ-શબ્દ-શ્રવણ મળીને કુલે દસ સ્થાનોનું નિરૂપણ, તે બધાથી દૂર રહેવા ઉપદેશ અને બ્રહ્મચર્યના મહિમા તથા તેનાથી શિવપદ પ્રાપ્તિ વગેરે વર્ણન છે.

(૧૭) અધ્યયન : પાપશ્રમણીય

આમાં નિર્ગ્રંથ-ધર્મને જાણતો હોવા છતાં સ્વચ્છંદ-ચારી, પ્રમાદી, અધ્યયન-વિમુખ, અધિક-આહારી, અધિક-નિદ્રા લેનાર, અવિવેકી, માયાવી, બહુભાષી, અભિમાની, લોભી, વિષય-લોલુપ, દ્વેષી, ચંચળ, અનિયમિત ભોજન કરવાવાળો, દુરાચારી, વિદ્યોપજીવી વગેરે દુર્ગુણોનું અને અંતે પંચાશ્રવનું સેવન કરનાર શ્રમણ ભ્રષ્ટ થાય છે વગેરે વર્ણન છે.

(૧૮) અધ્યયન : સંયતીય

કાંપિલ્યપુરના રાજા સંયતનું શિકાર માટે ગમન, મૃગને બાણથી વીંધવું, બાણ-હત મૃગનું અણગાર ગદ્દભાલી પાસે જવું, રાજાનું આગમન અને પશ્ચાત્તાપ, રાજા અને મુનિનો ધર્મ-સંવાદ, રાજા દ્વારા દીક્ષા ગ્રહણ અને ભરત, સગર, મઘવ વગેરે ૧૯ રાજાઓએ લીધેલી પ્રવ્રજ્યા વગેરે વર્ણન પછી અંતે જે સર્વથા પરિગ્રહથી મુક્ત છે તેને મુક્તિ મળે છે તેવો ઉપદેશ છે.

(૧૯) અધ્યયન : મૃગાપુત્રીય

આમાં સુગ્રીવ નગરના રાજા બળભદ્ર અને રાણી મૃગાના પુત્ર મૃગાની કથા છે. મૃગા પુત્રને મુનિનું દર્શન થવાથી પૂર્વ-જન્મ-સ્મૃતિ, માતાપિતા સાથે પ્રવ્રજ્યાની અનુમતિ પ્રાર્થના, ભોગો અને શ્રમણ-જીવનની કઠણતા વિષયક ચર્ચા, અંતે પ્રવજ્યા, એક માસની સંલેખના અને શિવપદ પ્રાપ્તિ વગેરે વર્ણન છે.

(૨૦) અધ્યયન : મહાનિર્ગ્રંથીય

આમાં આરંભે સિદ્ધો અને સંયતોને નમસ્કાર કરીને સત્ય ધર્મકથાની પ્રેરણા કરવામાં આવી છે. મગધના રાજા શ્રેણિક અને અનાથી મુનિનો સુંદર વાર્તાલાપ છે. અનાથતાના વિવિધ પ્રકારો જણાવી મહાનિર્ગ્રંથના જીવનનું વિસ્તૃત વર્ણન છે. આમાં મુનિ જીવનની તુલના પક્ષિ-જીવન સાથે કરવામાં આવી છે.

(૨૧) અધ્યયન : સમુદ્રપાલીય

આમાં ભગવાન મહાવીરના ચંપા નગરીવાસી શિષ્ય પાલિત શ્રાવક અને તેની પત્નીના પિહુડ નગરથી પરત આવતી વખતે સમુદ્રમાં પુત્ર જન્મ, પુત્રનું નામ સમુદ્રપાલ, કાળક્રમે કોઈ ચોરને વધ્યભૂમિ પર લઈ જવાતો જોઈને વૈરાગ્ય, પછી પ્રવ્રજ્યા, સંયમ સાધના અને કેવળજ્ઞાન વગેરે વર્ણનના અંતે સમુદ્રપાલ સંસાર-સમુદ્રને પાર કરી ગયાનો ઉપસંહાર છે.

(૨૨) અધ્યયન : રહનેમીય (રથનેમીય)

આમાં શૌરીપુરના રાજા વસુદેવની પત્ની શિવાના પુત્ર અરિષ્ટનેમિ દ્વારા વિવાહમંડપમાં વધમાટે રાખેલા પક્ષીઓને ઉડાડી મૂકવા, દીક્ષા અને રૈવતક-પર્વત પર તપ, રાજીમતી કુમારીની પ્રવ્રજ્યા અને અરિષ્ટનેમિના દર્શનાર્થે રૈવતક-પર્વત પર જતા માર્ગમાં વરસાદમાં ભીંજાઈ જવું, ભીના વસ્ત્રો સૂકવવા ગુફામાં જવું, ત્યાં તપ કરતા રથનેમિનું સંયમથી વિચલિત થવું, રાજીમતીનો ઉપદેશ, રથનેમિની સંયમમાં સ્થિરતા અને બંનેને કેવળજ્ઞાન અને નિર્વાણ વગેરે વર્ણન છે.

(૨૩) અધ્યયન : કેશી-ગૌતમીય

આમાં ભગવાન પાર્શ્વનાથના શ્રાવસ્તીના કેશીશ્રમણ અને ભગવાન મહાવીરના શિષ્ય ભગવાન ગૌતમ ગણધરનું મિલન, ભગવાન ગૌતમ ગણધર દ્વારા કેશીના ચતુર્યામધર્મ, અનુયાયી-શ્રમણ, વિજય-પ્રાપ્તિક્રમ વગેરે ૧૨ પ્રશ્નોના ઉત્તર અને સમાધાન અને કેશી શ્રમણ વડે પંચ મહાવ્રત ધારણ વગેરે વર્ણન છે.

(૨૪) અધ્યયન : સમિતિ

આમાં આઠ પ્રવચન-માતામાં પાંચ સમિતિઓ ઈર્યા, ભાષા, એષણા, આદાન અને પરિષ્ઠાપનિકા તેમજ ત્રણ ગુપ્તિ-મન, વચન અને કર્મ, તે બધાનાં ભેદોનું વર્ણન કરીને આ આઠ પ્રવચન-માતાની સમ્યક્ આરાધનાથી મુક્તિની વાત છે.

(૨૫) અધ્યયન : યજ્ઞીય

આમાં વારાણસી બહાર ઉદ્યાનમાં ઉતારો કરી રહેલા જયઘોષ મુનિનું યજ્ઞ કરી રહેલા વિજય ઘોષના યજ્ઞમાં ભિક્ષાર્થે જવું, ભિક્ષા ન આપવી, વિજયઘોષના પ્રશ્નોના જયઘોષ દ્વારા ઉત્તર, સાચા બ્રાહ્મણ અને વેદ-વિહિત યજ્ઞનું વર્ણન તેમજ શ્રમણ, બ્રાહ્મણ,

મુનિ અને તાપસની વ્યાખ્યાઓને અંતે વિજયઘોષની ભિક્ષા ગ્રહણ માટે પ્રાર્થના, જયઘોષ મુનિ દ્વારા વિરતિનો ઉપદેશ, વિજયઘોષની પ્રવ્રજ્યા વગેરે વર્ણન છે.

(૨૬) અધ્યયન : સમાચારી

આમાં સમાચારી ના ૧૦ ભેદ અને ૧૦ કર્તવ્ય, દિવસ-સમાચારી અને તેને માટે દિવસના ચાર ભાગ અનુસાર શ્રમણ-કૃત્ય તેમજ રાત્રિ-સમાચારી અને તેને માટે રાત્રિના ચાર ભાગ અનુસાર શ્રમણ-કૃત્ય, સિદ્ધસ્તુતિ અને અંતે સમાચારીની આરાધનાથી શિવપદ પ્રાપ્તિની વાત જણાવી છે.

(૨૭) અધ્યયન : ખલુંકીય

આમાં ગર્ગાચાર્યના આધ્યાત્મિક પરિચય પછી તેમનું ચિંતન, દુષ્ટ શિષ્યોની દુષ્ટ આખલા સાથે તુલના અને તેને વહન કરનાર સારથિની પોતાની સાથે તુલના, દુષ્ટ શિષ્ય ત્યાગ અને એકાકી વિહારનું કથાનક છે.

(૨૮) અધ્યયન : મોક્ષમાર્ગ-ગતિ

આમાં મોક્ષમાર્ગના જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર અને તપ એમ ચાર કારણ જણાવી દરેકના ભેદો અને તેની પરિભાષા તથા કર્તવ્યો વગેરે ચર્ચા કરીને તપ-સંયમ દ્વારા કર્મક્ષય થાય છે તેમ ઉપસંહાર કર્યો છે.

(૨૯) અધ્યયન : સમ્યક્ત્વ - પરાક્રમ

આમાં સંવેગ, નિર્વેદ, શ્રદ્ધા, શુશ્રૂષા (સેવા) વગેરે ૭૪ બાબતોના ફળની ચર્ચાને અંતે આ નિરૂપણ ભગવાન મહાવીર દ્વારા કરવામાં આવ્યું છે તેમ ઉપસંહાર કર્યો છે.

(૩૦) અધ્યયન : તપ-માર્ગ

આમાં તપશ્ચર્યાથી કર્મક્ષય થાય છે તેમ આરંભે જણાવીને છ પ્રકારના બાહ્ય તપ અને છ પ્રકારના આભ્યંતર તપ તેમના ભેદો અને લક્ષણો આપીને અંતે તપશ્ચર્યાથી નિર્વાણ મળે છે તેમ ઉપસંહાર કર્યો છે.

(૩૧) અધ્યયન : ચરણ-વિધિ

આમાં ચારિત્રથી ભવ-મુક્તિની વાત જણાવી, પ્રવૃત્તિ અને નિવૃત્તિની વ્યાખ્યા, રાગ દ્વેષ વગેરેમાંથી નિવૃત્તિ અને વ્રત-સમિતિઓ વગેરેમાં પ્રવૃત્તિ વગેરે વર્ણન પછી પિંડ-અવગ્રહ પ્રતિમા, બ્રહ્મચર્ય-ગુપ્તિ, ઉપાસક, ભિક્ષુ-પ્રતિમા વગેરેમાં પ્રવૃત્તિનું વિસ્તૃત વર્ણન કરી વિવિધ પ્રવૃત્તિ-નિવૃત્તિ જણાવી છે. ચરણ-વિધિની આરાધનાનું ફળ ભવ-મુક્તિ છે એવો ઉપસંહાર છે.

(૩૨) અધ્યયન : પ્રમાદ સ્થાન

આમાં સમાધિ-મરણનાં સાધનો, દુઃખના કારણ અને તેમનો સમૂળો નાશ, પાંચ ઈન્દ્રિય-વિષયોથી વિરક્ત થવાનો ઉપદેશ, તેમજ વિરક્ત, વીતરાગ, જીવન્મુક્ત, મુક્તાત્મા વગેરેનું વર્ણન છે.

(૩૩) અધ્યયન : કર્મ-પ્રકૃતિ

આમાં (૧) જ્ઞાનાવરણીય, (૨) દર્શનાવરણીય, (૩) વેદનીય, (૪) મોહનીય, (૫) આયુ, (૬) નામ, (૭) ગોત્ર અને (૮) અંતરાય- એમ કર્મની આઠ પ્રકૃતિઓ, જઘન્ય-ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિઓ અને તે કર્મોના અનુભાગ એવા રસ વગેરેનું વર્ણન છે.

(૩૪) અધ્યયન : લેશ્યા-વર્ણન

આમાં લેશ્યા સંબંધી ૧૧ અધિકાર, દરેક લેશ્યાના નામ, વર્ણ, રસ, ગંધ, સ્પર્શ, પરિણામ, લક્ષણ, સ્થાન, સ્થિતિ અને ગતિ વગેરેનું વર્ણન છે.

(૩૫) અધ્યયન : અણગાર

આમાં સાધુ-નિવાસના અયોગ્ય સ્થાન, ભોજન રાંધવાનો નિષેધ, ભિક્ષાવૃત્તિ-વિધાન, સાધના-વિધિ વગેરે વર્ણન છે.

(૩૬) અધ્યયન : જીવાજીવ વિભક્તિ

આમાં જીવ-અજીવ વિભક્તિના જ્ઞાન દ્વારા સંયમ સાધનાની વાત જણાવીને લોક-અલોકનું સ્વરૂપ, જીવ-અજીવના દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ અને ભાવનું નિરૂપણ કરીને અજીવના રૂપી-અરૂપી ભેદ-પ્રભેદો, લક્ષણ સ્થિતિ, પરિણામ વગેરે આપ્યાં છે.

જીવવિભાગમાં જીવના બે પ્રકાર- સિદ્ધ અને સંસારી, સંસારીના ભેદ-પ્રભેદો તેમજ તેમના લક્ષણ, સ્થિતિ, પરિણામ વગેરે વર્ણનને અંતે ઉપસંહારમાં જણાવ્યું છે કે આ છત્રીસ અધ્યયનોનું કથન કર્યા પછી ભગવાન મહાવીરને નિર્વાણ પ્રાપ્ત થયું હતું.

सिरि उसहदेव सामिस्स णमो। सिरि गोडी - जिराउला - सव्वोदयपासणाहाणं णमो। नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महइ महावीर वद्धमाण सामिस्स। सिरि गोयम-सोहम्माइ सव्व गणहराणं णमो। सिरि सुगुरु-देवाणं णमो। **卐卐卐 दसवेयालियसुत्तं 卐卐卐 १ पढमं दुमपुप्फियऽज्झयणं ☆☆☆** १. धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो। देवा वि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो। १ २. जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आवियई रसं। न य पुप्फं किलामेइ सो य पीणेइ अप्पयं ॥२॥ ३. एमेए समणा मुत्ता जे लोए संति साहुणो। विहंगमा व पप्फेसु दाण-भत्तेसणे रया ॥३॥ ४. वयं च वित्तिं लब्भामो न य कोइ उवहम्मई। अहागडेसु रीयंते पुप्फेसु भमरा जहा ॥४॥ ५. महुकारसमा बुद्धा जे भवंति अणिस्सिया। नाणापिंडिरया दंता तेण वुच्चंति साहुणो ॥५॥ त्ति बेमि ॥ ☆☆☆ ॥१॥ **२ बिइयं सामण्णपुव्वगऽज्झयणं ☆☆☆** ६. कहं नु कुज्जा सामण्णं जो कामे न निवारए। पए पए विसीयंतो संकप्पस्स वसं गओ ? ॥१॥ ७. वत्थ-गंधमलंकारं इत्थीओ सयणाणि य। अच्छंदा जे न भुंजंति न से चाइ त्ति वुच्चइ ॥२॥ ८. जे य कंते पिए भोए लद्धे विप्पिट्ठि कुव्वई। साहीणे चयई भोए से हु चाइ त्ति वुच्चई ॥३॥ ९. समाए पेहाए परिव्वयंतो, सिया मणो निस्सरई बहिद्धा। न सा महं नो वि अहं पि तीसे, इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं ॥४॥ १०. आयावयाही चय सोगुमल्लं, कामे कमाही कमियं खु दचक्खं। छिंदाहि दोसं विणएज्ज रागं, एवं सुही होहिसि संपराए ॥५॥ ११. पक्खंदे जलियं जोइं धूमकेउं दुरासयं। नेच्छंति वंतयं भोत्तुं कुले जाया अगंधणे ॥६॥ १२. धिरत्थु ते जसोकामी जो तं जीवियकारणा। वंतं इच्छसि आवेउं सेयं ते मरणं भवे ॥७॥ १३. अहं च भोगरायस्स तं च सि अंधगवण्हिणो। मा कुले गंधणा होमो संजमं निहुओ चर ॥८॥ १४. जइ तं काहिसि भावं जा जा दच्छिसि नारिओ। वायाइद्धो व्व हडो अट्ठियप्पा भविस्ससि ॥९॥ १५. तीसे सो वयणं सोच्चा संजयाए सुभासियं। अंकुसेण जहा नागो धम्मे संपडिवाइओ ॥१०॥ १६. एवं करेंति संबुद्धा पंडिया पवियक्खणा। विणियट्टंति भोगेसु जहा से पुरिसोत्तमो ॥११॥ त्ति बेमि ॥२॥ **☆☆☆ ३ तइयं खुड्डियायारकहऽज्झयणं ☆☆☆** १७. संजमे सुट्ठियप्पाणं विप्पमुक्काण ताइणं। तेसिमेयमणाइण्णं निग्गंथाणं महेसिणं ॥१॥ १८. उद्देसियं १ कीयगडं २ नियागं ३ अभिहडाणि ४ य। राइभत्ते ५ सिणाणे ६ य गंध ७ मल्ले ८ य वीयणे ९ ॥२॥ १९. सन्निही १० गिहिमत्ते ११. य रायपिंडे किमिच्छए १२। संबाहण १३ दंतपहोयणा १४ य, संपुच्छण १५ देहपलोयणा १६ य ॥३॥ २०. अट्ठावए १७ य नाली य १८ छत्तस्स य धारणट्ठाए १९। तेगिच्छं २० पाहणा पाए २१ समारंभं च जोइणो २२ ॥४॥ २१. सेज्जायरपिंडं २३ च आसंदी २४ पलियंकए २५। गिहंतरनिसेज्जा २६ य गायस्सुव्वट्टणाणि २७ य ॥५॥ २२. गिहिणो वेयावडियं २८ जा य आजीववत्तिया २९। तत्तानिव्वुडभोइत्तं ३० आउरस्सरणाणि ३१ य ॥६॥ २३. मूलए ३२ सिंगबेरे ३३ य उच्छुखंडे अणिव्वुहे ३४। कंदे ३५ मूले ३६ सच्चिते फले ३७ बीए य आमए ३८ ॥७॥ २४. सोवच्चले ३९ सिंधवे लोणे ४० रुमालोणे य आमए.४१। सामुद्दे ४२ पंसुखारे ४३ य कालालोणे य आमए ४४ ॥८॥ २५ धूवणे ४५ त्ति वमणे ४६ य वत्थीकम्म ४७ विरेयणे ४८। अंजणे ४९ दंतवणे ५० य गायाभंग ५१ विभूसणे ५२ ॥९॥ २६. सव्वमेयमणाइण्णं निग्गंथाण महेसिणं। संजमम्मि य जुत्ताणं लहुभूयविहारिणं ॥१०॥ २७. पंचासवपरिन्नाया तिगुत्ता छसु संजया। पंजनिग्गहणा धीरं निग्गंथा उज्जुदंसिणो ॥११॥ २८. आयावयंति गिम्हेसु हेमंतेसु अवाउडा। वासासु पडिसंलिणा संजया सुसमाहिया ॥१२॥ २९. परीसहरिऊदंता धुयमोहा जिइंदिया। सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा पक्कमंति महेसिणो ॥१३॥ ३०. दुक्कराइं करेत्ता णं दुस्सहाइं सहेत्तु य। केइत्थ देवलोगेसु केइ सिज्झंति नीरया ॥१४॥ ३१. खवेत्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य। सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता ताइणो परिनिव्वुड ॥१५॥ त्ति बेमि ॥ **☆☆☆ चउत्थं छज्जीवणियऽज्झयणं ☆☆☆** ३२. सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं इह खलु छज्जीवणिया नामऽज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवइया सुयक्खाया सुपण्णत्ता सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती ॥१॥ ३३. कयरा खलु सा छज्जीवणिया नामऽज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता सेयं मे

सौजन्य :- पू. सा. श्री अरुणाप्रभाश्री म.सा. शिष्या पू. सा. श्री नंदीवर्धना श्री जी म.सा. नी प्रेरणाथी अं. सौ. रतनबेन कल्याणजी नागलपुर (कच्छ) घाटकोपर

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती ? ॥२॥ ३४. इमा खलु सा छज्जीवणिया णामऽज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नती । तं जहा पुढविकाइया १ आउकाइया २ तेउकाइया ३ वाउकाइया ४ वणस्सइकाइया ५ तसकाइया ६ ॥३॥ ३५. पुढवि चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढो सत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥४॥ ३६. आउ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढो सत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥५॥ ३७. तेउ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढो सत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥६॥ ३८. वाउ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढो सत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥७॥ ३९. वणस्सइ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढो सत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं, तं जहा अग्गबीया मूलबीयां पोरबीया खंधबीया बीयरुहा सम्मुच्छिमा तणलया वणस्सइकाइया सबीया, चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढो सत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥८॥ ४०. से जे पुण इमे अणेगे बहवे तसा पाणा तं जहा अंडया पोयया जराउया रसया संसेइमा सम्मुच्छिमा उब्भिया उववाइया जेसिं केसिंचि पाणाणं अभिक्कंतं पडिक्कंतं संकुचियं पसारियं रुयं भंतं तसियं पलाइयं, आगइ-गइविन्नाया, जे य कीड-पयंगा, जा य कुंथु-पिवीलिया, सव्वे बेइंदिया सव्वे तेइंदिया सव्वे चउरिंदिया सव्वे पंचेदिया सव्वे तिरिक्खजोणिया सव्वे नेरइया सव्वे मणुया सव्वे देवा पाणा परमाहम्मिया, एसो खलु छट्ठो जीवनिकाओ तसकाओ त्ति पवुच्चइ ॥९॥ ४१. इच्चेसिं छण्हं जीवनिकायाणं नेव सयं दंडं समारंभेज्जा, नेवऽन्नेहिं दंडं समारंभावेज्जा, दंडं समारंभंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा । जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥१०॥ पुढविक्कातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहि पण्णत्ते । अणभिगतपुण्ण-पावो ण सो उट्ठावणाजोग्गो ॥१॥ आउक्कातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहि पण्णत्ते । अणभिगतपुण्ण-पावो ण सो उट्ठावणाजोग्गो ॥२॥ तेउक्कातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहि पण्णत्ते । अणभिगतपुण्ण-पावो सो उट्ठावणाजोग्गो ॥३॥ वाउक्कातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहि पण्णत्ते । अणभिगतपुण्ण-पावो ण सो उट्ठावणाजोग्गो ॥४॥ वणस्सतिकातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहि पण्णत्ते । अणभिगतपुण्ण-पावो ण सो उट्ठावणाजोग्गो ॥५॥ तसकातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहि पण्णत्ते । अणभिगतपुण्ण-पावो ण सो उवट्ठावणाजोग्गो ॥६॥ पुढविक्कातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहि पण्णत्ते । अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उवट्ठावणे जोग्गो ॥७॥ आउक्कातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहि पण्णत्ते । अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उवट्ठावणे जोग्गो ॥८॥ तेउक्कातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहि पण्णत्ते । अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उवट्ठावणे जोग्गो ॥९॥ वाउक्कातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहि पण्णत्ते । अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उवट्ठावणे जोग्गो ॥१०॥ वणस्सतिक्कातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहि पण्णत्ते । अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उवट्ठावणे जोग्गो ॥११॥ तसकातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहि पण्णत्ते । अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उवट्ठावणे जोग्गो ॥१२॥ ४२. पढमे भंते ! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं । सव्वं भंते ! पाणाइवायं पच्चक्खामि, से सुहुमं वा बायरं वा तसं वा थावरं वा, नेव सयं पाणे अइवाएज्जा, नेवऽन्नेहिं पाणे अइवायावेज्जा, पाणे अइवायंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा । जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि । पढमे भंते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं ॥११॥ ४३. अहावरे दोच्चे भंते ! महव्वए मुसावायाओ वेरमणं । सव्वं भंते ! मुसावायं पच्चक्खामि, से कोहा वा लोहा वा भया वा हासा वा । नेव सयं मुसं वएज्जा, नेवऽन्नेहिं मुसं वायावेज्जा, मुसं वयंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा । जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि । दोच्चे भंते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ॥१२॥ ४४. अहावरे तच्चे भंते ! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमणं । सव्वं भंते ! अदिन्नादाणं पच्चक्खामि । से गामे वानगरे वा रन्ने वा अप्पं वा बहुं वा अणु वा थूलं वा चितमंतं वा अचितमंतं वा । नेव सयं अदिन्नं गेण्हेज्जा, नेवऽन्नेहिं अदिन्नं गेण्हावेज्जा, अदिन्नं गेण्हंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा । जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि । तच्चे भंते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥१३॥ ४५. अहावरे चउत्थे भंते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं। सव्वं भंते ! मेहुणं पच्चक्खामि, से दिव्वं वा माणुस्सं वा तिरिक्खजोणियं वा। नेव सयं मेहुणं सेवेज्जा, नेवऽन्नेहिं मेहुणं सेवावेंज्जा, मेहुणं सेवंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि। चउत्थे भंते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ॥१४॥ ४६. अहावरे पंचमे भंते ! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं। सव्वं भंते ! परिग्गहं पच्चक्खामि, से अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चितमंतं वा अचित्तमंतं वा। नेव सयं परिग्गहं परिगेण्हेज्जा, नेवऽन्नेहिं परिग्गहं परिगेण्हावेज्जा, परिग्गहं परिगेण्हंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि। पंचमे भंते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥१५॥ ४७. अहावरे छट्ठे भंते ! वए राईभोयणाओ वेरमणं। सव्वे भंते ! राईभोयणं पच्चक्खामि, से असणं वा पाणं खाइमं वा साइमं वा। नेव सयं राइं भुंजेज्जा, नेवऽन्नेहिं राइं भुंजवेज्जा, राइं भुंजंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि। छट्ठे भंते ! वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं ॥१६॥ ४८. इच्चेइयाइं पंच महव्वयाइं राईभोयणवेरमणछट्ठाइं अत्तहियट्ठयाए उवसंपज्जित्ता णं विहरामि ॥१७॥ ४९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपाव-कम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमणे वा, से पुढविं वा भित्तिं वा सिलं वा लेलुं वा ससरक्खं वा कायं ससरक्खं वा वत्थं हत्थेण वा पाएण वा कट्ठेण वा कलिचेण वा अंगुलियाए वा सलगाए वा सलागहत्थेण वा नाऽऽलिहेज्जा न विलिहेज्जा न घट्टेज्जा न भिंदेज्जा, अन्नं नाऽऽलिहावेज्जा न विलिहावेज्जा न घट्टावेज्जा न भिंदावेज्जा अन्नं आलिहंतं वा विलिहंतं वा घट्टंतं वा भिंदंतं वा न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेते पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥१८॥ ५०. से भिक्खू वा भिक्खुणि वा संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपाव-कम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमणे वा, से उदगं वा ओसं वा हिमं वा महियं वा करंग वा हरतणुगं वा सुद्धोदगं वा उदओल्लं वा कायं उदओल्लं वा वत्थं ससिणिद्धं वा कायं ससिणिद्धं वा वत्थं नाऽऽमुसेज्जा न संफुसेज्जा न आवीलेज्जा न पवीलेज्जा न अक्खोडेज्जा न पक्खोडेज्जा न आयावेज्जा न पयावेज्जा, अन्नं नाऽऽमुसावेज्जा न संफुसावेज्जा न आवीलावेज्जा न पवीलावेज्जा न अक्खोडावेज्जा न पक्खोडावेज्जा न आयावेज्जा न पयावेज्जा, अन्नं आमुसंतं वा संफुसंतं वा आवीलंतं वा पवीलंतं वा अक्खोडेंतं वा पक्खोडेंतं वा आयावेंतं वा पयावेंतं वा न समणुजाणेज्ज। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥१९॥ ५१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपाव-कम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा से अगणिं वा इंगालं वा मुम्मुरं वा अच्चिं वा जालं वा अलायं वा सुद्धागणिं वा उक्कं वा, न उंजेज्जा न घट्टेज्जा न उज्जालेज्जा न निव्वावेज्जा, अन्नं न उंजावेज्जा न घट्टावेज्जा न उज्जालावेज्जा न निव्वावेज्जा, अन्नं उंजंतं वा घट्टंतं वा उज्जालंतं वा निव्वावंतं वा न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥२०॥ ५२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमणे वा, से सिएण वा विहुयणेण वा तालियंटण वा पत्तेण वा पत्तभंगेण वा साहाए वा साहाभंगेण वा पिहुणेण वा पिहुणहत्थेण वा चेलेण वा चेलकण्णेण वा हत्थेण वा मुहेण वा अप्पणो वा कायं बाहिरं वा वि पोग्गलं न फूमेज्जा न वीएज्जा, अन्नं न फूमावेज्जा न वीयावेज्जा, अन्नं फूमंतं वा वीयंतं वा न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥२१॥ ५३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, से बीएसु वा बीयपइट्ठेसु वा रूढेसु वा रूढपइट्ठेसु वा जाएसु वा जायपइट्ठेसु वा हरिएसु वा हरियपइट्ठेसु वा छिन्नेसु वा छिन्नपइट्ठेसु वा सच्चित्तेसु वा सच्चित्तकोलयडिनिस्सिएसु वा, न गच्छेज्जा न चिट्ठेज्जा न निसीएज्जा न तुयट्टेज्जा, अन्नं न गच्छावेज्जा न चिट्ठावेज्जा न निसीयावेज्जा न तुयट्टावेज्जा, अन्नं गच्छंतं वा चिट्ठंतं वा निसीयंतं वा तुयट्टंतं वा न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥२२॥ ५४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपाव-कम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, से कीडं वा पयंगं वा कुंथुं वा पिविलियं वा हत्थंसि वा पायंसि वा बाहुंसि वा ऊरुंसि वा उदरंसि वा सीसंसि वा वत्थंसि वा पडिग्गहंसि वा कंबलंसि वा पायपुंछणंसि वा रयहरणंसि वा गोच्छगंसि वा उंडगंसि वा दंडगंसि वा पीढगंसि वा फलगंसि वा सेज्जंसि वा संथारगंसि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारे उवगरणजाए तओ संजयामेव पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय एगंतमवणेज्जा, नो णं संघायमावज्जेज्जा ॥२३॥ ५५. अजयं चरमाणो उ पाण-भूयाइं हिंसई। बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥२४॥ ५६. अजयं चिट्ठमाणो उ पाण-भूयाइं हिंसई। बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥२५॥ ५७. अजयं आसमाणो उ पाण-भूयाइं हिंसई। बंधई पावयं कम्मं सं से होइ कडुयं फलं ॥२६॥ ५८. अजयं सयमाणो उ पाण-भूयाइं हिंसई। बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥२७॥ ५९. अजयं भुंजमाणो उ पाण-भूयाइं हिंसई। बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥२७॥ ६०. अजयं भासमाणो उ पाण-भूयाइं हिंसई। बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥२७॥ ६१. कहं चरे ? कहं चिट्ठे ? कहमासे ? कहं सए ?। कहं भुंजंतो भासंतो पावं कम्मं न बंधई ? ॥३०॥ ६२. जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं सए। जयं भुंजंतो भासंतो पावं कम्मं न बंधई ॥३१॥ ६३. सव्वभूयऽप्पभूयस्स सम्मं भूयाइं पासाओ। पिहियासवस्स दंतस्स पावं कम्मं न बंधई ॥३२॥ ६४. पढमं नाणं तओ दया एवं चिट्ठइ सव्वसंजए। अन्नाणी किं काही ? किं वा नाहिइ छेय पावगं ? ॥३३॥ ६५. सोच्चा जाणइ कल्लाणं सोच्चा जाणइ पावगं। उभयं पि जाणई सोच्चा जं छेयं तं समायरे ॥३४॥ ६६. जो जीवे वि न याणति अजीवे वि न याणति। जीवाऽजीवे अयाणंतो कह सो नाहिइ संजमं ? ॥३५॥ ६७. जो जीवे वि वियाणति अजीवे वि वियाणति। जीवाऽजीवे वियाणंतो सो हु नाहिइ संजमं ॥३६॥ ६८. जया जीवमजीवे य दो वि एए वियाणई। तया गइं बहुविहं सव्वजीवाण जाणई ॥३७॥ ६९. जया गइं बहुविहं सव्वजीवाण जाणाई। तया पुण्णं च पावं च बंधं मोक्खं च जाणई ॥३८॥ ७०. जया पुण्णं च पावं च बंधं मोक्खं च जाणाई। तया निव्विंदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ॥३९॥ ७१. जया निव्विंदए भोए जे दिव्वे जे य माणुस्से। तया चयइ संजोगं सऽब्भिंतरबाहिरं ॥४०॥ ७२. जया चयइ संजोगं सऽब्भिंतर-बाहिरं। तया मुंडे भवित्ताणं पव्वइए अणगारियं ॥४१॥ ७३. जया मुंडे भवित्ताणं पव्वइए अणगारियं। तया संवरमुक्कट्ठं धम्मं फासे अणुत्तरं ॥४२॥ ७४. जया संवरमुक्कट्ठं धम्मं फासे अणुत्तरं। तया धुणइ कम्मरयं अबोहिकलुसं कडं ॥४३॥ ७५. जया धुणइ कम्मरयं अबोहिकलुसं कडं। तया सव्वत्तगं नाणं दंसणं चाभिगच्छई ॥४४॥ ७६. जया सव्वत्तगं नाणं दंसणं चाभिगच्छई। तया लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली ॥४५॥ ७७. जया लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली। तया जोगे निरुंभित्ता सेलेसिं पडिवज्जई ॥४६॥ ७८. जया जोगे निरुंभित्ता सेलेसिं पडिवज्जई। तया कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥४७॥ ७९. जया कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ। तया लोगमत्थयत्थो सिद्धो भवइ सासओ ॥४८॥ ८०. सुहसायगस्स समरस्स सायाउलगस्स निगामसाइस्स। उच्छोलणापहोइस्स दुलहा सोग्गइ तारिसगस्स ॥४९॥ ८१. तवोगुणपहाणस्स उज्जुमइ-खंति-संजमरयस्स। परीसहे जिणंतस्स सुलहा सोग्गइ तारिसगस्स ॥५०॥ पच्छा वि ते पयाया खिप्पं गच्छंति अमरभवणाइं। जेसिं पिओ तवो संजमो य खंती य बंभचेरं च ॥ ८२. इच्चेयं छज्जीवणियं सम्मद्दिट्ठी सया जए। दुलहं लभित्तु सामण्णं कम्मुणा ण विराहेज्जासि ॥५१॥त्ति बेमि ॥ ☆☆☆ ॥ चउत्थं छज्जीवणियऽज्झयणं ॥४॥ ५ पंचमं पिंडेसणऽज्झयणं ☆☆☆ पढमो उद्देसओ ☆☆☆ ८३. संपत्ते भिक्खकालम्मि असंभंतो अमुच्छिओ। इमेण

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कमजोगेण भत्त-पाणं गवेसए ॥१॥ ८४. से गामे वा नगरे वा गोयरग्गगओ मुणी। चरे मंदमणुव्विग्गो अव्वक्खित्तेण चेयसा ॥२॥ ८५. पुरओ जुगमायाए पेहमाणो महिं चरे। वज्जेंतो बीय-हरियाइं पाणे य दग-मट्टियं ॥३॥ ८६. ओवायं विसमं खाणुं विज्जलं परिवज्जए। संकमेण न गच्छेज्जा विज्जमाणे परक्कमे ॥४॥ ८७. पवडंते व से तत्थ पक्खुलंते व संजए। हिंसेज्ज पाण-भूयाइं तसे अदुव थावरे ॥५॥ ८८. तम्हा तेण गच्छेज्जा संजए सुसमाहिए। सइ अन्नेण मग्गेण जयमेव परक्कमे ॥६॥ ८९. इंगालं छारियं रासिं तुसरासिं च गोमयं। ससरक्खेहिं पाएहिं संजओ तं न अक्कमे ॥७॥ ९०. न चरेज्ज वासे वासंते महियाए व पडंतिए। महावाए व वायंते तिरिच्छसंपाइमेसु वा ॥८॥ ९१. न चरेज्ज वेससामंते बंभचेरवसाणुए। बंभयारिस्स दंतस्स होज्जा तत्थ विसोत्तिया ॥९॥ ९२. अणायणे चरंतस्स संसग्गीए अभिक्खणं। होज्ज वयाणं पीला सामण्णम्मि य संसओ ॥१०॥ ९३. तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दोग्गइवड्ढणं। वज्जए वेससामंतं मुणी एगंतमस्सिए ॥११॥ ९४. साणं सूयं गाविं दित्तं गोणं हयं गयं। संडिब्भं कलहं जुद्धं दूरओ परिवज्जए ॥१२॥ ९५. अणुन्नए नावणए अप्पहिट्ठे अणाउले। इंदियाइं जहाभागं दमइत्ता मुणी चरे ॥१३॥ ९६. दवदवस्स न गच्छेज्जा भासमाणो य गोयरे। हंसतो नाभिगच्छेज्जा कुलं उच्चावयं सया ॥१४॥ ९७. आलोयं थिग्गलं दारं संधिं दगभवणाणि य। चरंतो न विणिज्झाए संकट्ठाणं विवज्जए ॥१५॥ ९८. रण्णो गहवईणं च रहस्साऽऽरक्खियाणि य। संकिलेसकरं ठाणं दूरओ परिवज्जए ॥१६॥ ९९. पडिकुट्ठकुलं न पविसे मामगं परिवज्जए। अचियत्तकुलं न पविसे चियत्तं पविसे कुलं ॥१७॥ १००. साणी-पावारपिहियं अप्पणा नावपंगुरे। कवाडं नो पणोल्लेज्जा ओग्गहं सि अजाइया ॥१८॥ १०१. गोयरग्गपविट्ठो उ वच्च-मुत्तं न धारए। ओगासं फासुयं नच्चा अणुन्नविय वोसिरे ॥१९॥ १०२. नीयदुवारं तमसं कोट्ठगं परिवज्जए। अचक्खुविसओ जत्थ पाणा दुप्पडिलेहगा ॥२०॥ १०३. जत्थ पुप्फइं बीयाइं विप्पइण्णाइं कोट्ठए। अहुणोवलित्तं ओल्लं दट्ठूणं परिवज्जए ॥२१॥ १०४. एलगं दारगं साणं वच्छगं वा वि कोट्ठए। उल्लंघिया न पविसे विऊहित्ताण व संजए ॥२२॥ १०५. असंसत्तं पलोएज्जा नाइदूरावलोयए। उप्फुल्लं न विणिज्झाए नियट्टेज्ज अयंपिरो ॥२३॥ १०६. अइभूमिं न गच्छेज्जा गोयरग्गगओ मुणी। कुलस्स भूमिं जाणित्ता मियं भूमि परक्कमे ॥२४॥ १०७. तत्थेव पडिलेहेज्जा भूमिभागं वियक्खोणो। सिणाणस्स य वच्चस्स संलोगं परिवज्जए। १०८. दग-मट्टियआयाणे बीयाणे हरियाणि य। परिवज्जेंतो चिट्ठेज्जा सव्विंदियसमाहिए ॥२६॥ १०९. तत्थ से चिट्ठमाणस्स आहरे पाण-भोयणं। अकप्पियं न गेण्हेज्जा पडिगाहेज्जा कप्पियं ॥२७॥ ११०. आहरंती सिया तत्थ परिसाडेज्जा भोयणं। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥२८॥ १११. सम्मद्दमाणी पाणाणि बीयाणि हरियाणी य। असंजमकरिं नच्चा तारिसं परिवज्जए ॥२९॥ ११२. साहट्टु निक्खिवित्ताणं सच्चित्तं घट्टियाण य। तहेव समणट्ठाए उदगं संपणोल्लिया ॥३०॥ ११३. आगाहइत्ता चलइत्ता आहरे पाण-भोयणं। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥३१॥ ११४. पुरेकम्मेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥३२॥ ११५. उदओल्लेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥३३॥ ११६. ससिणिद्धेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥३४॥ ११७. ससरक्खेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥३५॥ ११८. मट्टियागतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥३६॥ ११९. ऊसगतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥३७॥ १२०. हरितालगतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥३८॥ १२१. हिंगुलुयगतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥३९॥ १२२. मणोसिलागतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४०॥ १२३. अंजणगतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४१॥ १२४. लोणगतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४२॥ १२५. गेरुयगतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४३॥ १२६. वण्णियगतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४४॥ १२७. सेडियगतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४५॥ १२८. सोरट्ठियगतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४६॥ १२९. पिट्ठगतेण हत्थेण दव्वीए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भायणेण वा। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४७॥ १३०. कुक्कुसगतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४८॥ १३१. उक्कुट्ठगतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४९॥ १३२. असंसट्ठेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा। दिज्जमाणं न इच्छेज्जा पच्छकम्मं जहिं भवे ॥५०॥ १३३. संसट्ठेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा। दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा जं तत्थेसणियं भवे ॥५१॥ १३४. दोण्हं तु भुंजमाणाणं एगो तत्थ निमंतए। दिज्जमाणं न इच्छेज्जा छंदं से पडिलेहए ॥५२॥ १३५. दोण्हं तु भुंजमाणाणं दो वि तत्थ निमंतए। दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा जं तत्थेसणियं भवे ॥५३॥ १३६. गुव्विणीए उवन्नत्थं विविहं पाण-भोयणं। भुज्जमाणं विवज्जेज्जा भुत्तसेसं पडिच्छए ॥५४॥ १३७. सिया य समणट्ठाए गुव्विणी कालमासिणी। उट्ठिया वा निसीएज्जा निसन्ना वा पुणुट्ठए ॥५५॥ १३८. तं भवे भत्त-पाणं तु संजयाण अकप्पियं। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥५६॥ १३९. थणगं पज्जेमाणी दारगं वा कुमारियं। तं निक्खिवित्तु रोयंतं आहरे पाण-भोयणं ॥५७॥ १४०. तं भवे भत्त-पाणं तु संजयाण अकप्पियं। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥५८॥ १४१. जं भवे भत्त-पाणं तु कप्पाऽकप्पम्मि संकियं। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥५९॥ १४२. दगवारएण पिहियं नीसाए पीढएण वा। लोढेण वा वि लेवेण सिलेसेण व केणई ॥६०॥ १४३. तं च उब्भिदिउं देज्जा समणट्ठाए व दायए। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥६१॥ १४४. असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा। जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा दाणट्ठा पगडं इमं ॥६२॥ १४५. तं भवे भत्त-पाणं तु संजयाण अकप्पियं। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥६३॥ १४६. असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा। जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा पुण्णट्ठा पगडं इमं ॥६४॥ १४७. तं भवे भत्तं-पाणं तु संजयाण अकप्पियं। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥६५॥ १४८. असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा। जं जाणेज्जा सुणेज्जा वा वणिमट्ठा पगडं इमं ॥६६॥ १४९. तं भवे भत्त-पाणं तु संजयाण अकप्पियं। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥६७॥ १५०. असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा। जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा समणट्ठा पगडं इमं ॥६८॥ १५१. तं भवे भत्त-पाणं तु संजयाण अकिप्पियं। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥६९॥ १५२. उद्देसियं कीयगडं पूईकम्मं च आहडं। अज्झोयर पामिच्चं मीसजायं वज्जए ॥७०॥ १५३. उग्गमं से पुच्छेज्जा कस्सऽट्ठा ? केण वा कडं ?। सोच्चा निस्संकियं सुद्धं पडिगाहेज्ज संजए ॥७१॥ १५४. असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा। पुप्फेसु हाज्ज उम्मीसं बीएसु हरिएसु वा ॥७२॥ १५५. तं भवे भत्त-पाणं तु संजयाण अकिप्पियं। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७३॥ १५६. असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा। उदगम्मि होज्ज निक्खित्तं उत्तिंग-पणगेसु वा ॥७४॥ १५७. तं भवे भत्त-पाणं तु संजयाण अकप्पियं। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७५॥ १५८. असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा। अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च संघट्टिया दए ॥७६॥ १५९. तं भवे भत्त-पाणं तु संजयाण अकिप्पियं। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७७॥ १६०. असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा। अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च उस्सक्किया दए ॥७८॥ १६१. तं भवे भत्त-पाणं तु संजयाण अकिप्पियं। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७९॥ १६२. असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा। अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च ओसक्किया दए ॥८०॥ १६३. तं भवे भत्त-पाणं तु संजयाण अकिप्पियं। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥८१॥ १६४. असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा। अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च उज्जालिया दए ॥८२॥ १६५. तं भवे भत्त-पाणं तु संजयाण अकिप्पियं। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥८३॥ १६६. असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा। अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च पज्जालिया दए ॥८४॥ १६७. तं भवे भत्त-पाणं तु संजयाण अकिप्पियं। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥८५॥ १६८. असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा। अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च निव्वाविया दए ॥८६॥ १६९. तं भवे भत्त-पाणं तु संजयाण अकिप्पियं। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥८७॥ १७०. असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा। अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च उस्सिंचिया दए ॥८८॥ १७१. तं भवे भत्त-पाणं तु संजयाण अकिप्पियं। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥८९॥ १७२. असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा। अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च निस्सिंचिया दए ॥९०॥ १७३. तं भवे भत्त-पाणं तु संजयाण अकिप्पियं। देंतियं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥९१॥ १७४. असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा। अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च ओवत्तिया दए ॥९२॥ १७५. तं भवे भत्त-पाणं तु संजयाण अकप्पियं। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥९३॥ १७६. असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा। अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च ओयारिया दए ॥९४॥ १७७. तं भवे भत्त-पाणं तु संजयाण अकिप्पियं। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥९५॥ १७८. होज्ज कट्ठं सिलं वा वि इट्टालं वा वि एगया। ठवियं संकमट्ठाए तं चे होज्ज चलाचलं न मे कप्पइ तारिसं ॥९६॥ १७९. न तेण भिक्खू गच्छेज्जा दिट्ठो तत्थ असंजमो। गंभीरं झुसिरं चेव सव्विदियसमाहिए ॥९७॥ १८०. निस्सेणिं फलगं पीढं उस्सवित्ताणमारुहे। मंचं कीलं च पासायं समणट्ठाए व दावए ॥९८॥ १८१. दुरूहमाणी पवडेज्जा हत्थं पायं व लूसए। पुढविजीवे विहिंसेज्जा जे य तन्निस्सिया जगा ॥९९॥ १८२. एयारिसे महादोसे जाणिऊण महेसिणो। तम्हा मालोहडं भिक्खं न पडिगेण्हंति संजया ॥१००॥ १८३. कंदं मूलं पलंबं वा आमं चिन्नं च सन्निरं। तुंबागं सिंगबेरं च आमगं परिवज्जए ॥१०१॥ १८४. तहेव सतुचुण्णाइं कोलचुण्णाइं आवणे। सक्कुलिं फाणियं पूयं अन्नं वा वि तहाविहं ॥१०२॥ १८५. विक्कायमाणं पसढं रएण परिफासियं। देंतियं पडियाइक्खेन मे कप्पइ तारिसं ॥१०३॥ १८६. बहुअट्ठियं पोग्गलं अणिमिसं वा बहुकंटयं। अच्छियं तेंदुयं बिल्लं उच्छुखंडं च सिंबलिं ॥१०४॥ १८७. अप्पे सिया भोयणज्जाए बहुउज्झियधम्मए। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥१०५॥ १८८. तहेवुच्चावयं पाणं अदुवा वारधोवणं। संसेइमं चाउलोधगं अहुणाधोयं विवज्जए ॥१०६॥ १८९. जं जाणेज्जा चिराधोयं मईए दंसणेण वा। पडिपुच्छिऊण सोच्चा वा जं च निस्संकियं भवे ॥१०७॥ १९०. अजीवं परिणयं नच्चा पडिगाहेज्जा संजए। अह संकियं भवेज्जा आसाइत्ताण रोयए ॥१०८॥ १९१. थोवमासायणट्ठाए हत्थगम्मि दलाहि मे। मा मे अच्चंबिलं पूइं नालं तण्हं विणेत्तए ॥१०९॥ १९२. तं च अच्चंबिलं पूइं नालं तण्हं विणेत्तए। देंतियं पडियाइक्खेन मे कप्पइ तारिसं ॥११०॥ १९३. तं च होज्ज अकामेणं विमणेण पडिच्छियं। तं अप्पणा न पिबे नो वि अन्नस्स दावए ॥१११॥ १९४. एगंतमवक्कमित्ता अचित्तं पडिलेहिया। जयं परिट्ठवेज्जा परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥११२॥ १९५. सिया य गोयरग्गगओ इच्छेज्जा परिभोत्तुयं। कोट्ठगं भित्तिमूलं वा पडिलेहत्ताण फासुयं ॥११३॥ १९६. अणुन्नवेतु मेहावी पडिच्छन्नम्मि संवुडे। हत्थगं संपमज्जित्ता तत्थ भुजेज्ज संजए ॥११४॥ १९७. तत्थ से भुंजमाणस्स अट्ठियं कंटओ सिया। तण कट्ठ सक्करं वा अन्नं वा वि तहाविहं ॥११५॥ १९८. तं उक्खिवित्तु न निखिवे आसएण न छड्डए। हत्थेण तं गहेऊण एगंतमक्कमे ॥११६॥ १९९. गंतमवक्कमित्ता अच्चितं पडिलेहिया। जयं परिट्ठवेज्जा परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥११७॥ २००. सिया य भिक्खु इच्छेज्जा सेज्जामागम्म भोत्तुयं। सपिंडपायमागम्म उंडुयं पडिलेहिया ॥११८॥ २०१. विणएण पविसित्ता सगासे गुरुणो मुणी। इरियावहियमायाय आगओ य पडिक्कमे ॥११९॥ २०२. आमोएत्ताण निस्सेसं अइयारं जहक्कमं। गमणाऽऽगमणे चेव भत्त-पाणे व संजए ॥१२०॥ २०३. उज्जुप्पण्णो अणुव्विग्गो अव्वक्खित्तेण चेयसा। आलोए गुरुसगासे जं जहा गहियं भवे ॥१२१॥ २०४. न सम्ममालोइयं होज्जा पुव्विं पच्छा व जं कडं। पुणो पडिक्कमे तस्स वोसट्ठो चिंतए इमं ॥१२२॥ २०५. अहो ! जिणेहिं असावज्जा वित्ती साहूण देसिया। मोक्खसाहणहेउस्स साहुदेहस्स धारणा ॥१२३॥ २०६. नमोक्कारेण पारेत्ता करेत्ता जिणसंथवं। सज्झायं पट्ठवेत्ताणं वीसमेज्ज खणं मुणी ॥१२४॥ २०७. वीसमंतो इमं चिंते हियमट्ठं लाभमट्ठिओ। जइ मे अणुग्गहं कुज्जा साहू ! होज्जामि तारिओ ॥१२५॥ २०८. साहवो तो चियत्तेणं निमंतेज्जं जहक्कमं। जइ तत्थ केइ इच्छेज्जा तेहिं सद्धिं तु भुंजए ॥१२६॥ २०९. अह कोई न इच्छेज्जा तओ भुंजेज्ज एगओ। आलोए भायणे साहू जयं अपरिसाडियं ॥१२७॥ २१०. तित्तगं व कडुयं व कसायं, अंबिलं व महुरं लवणं वा। एय लद्धमन्नट्ठपउत्तं महु-घयं व भुंजेज्ज संजए ॥१२८॥ २११. अरसं विरसं वा वि सूइयं व असूइयं। ओल्लं वा जइ वा सुक्कं मंथु-कुम्मासभोयणं ॥१२९॥ २१२. उप्पन्नं नाइहीलेज्जा अप्पं वा बहु फासुयं। मुहालद्धं मुहाजीवी भुंजेज्जा दोसवज्जियं ॥१३०॥ २१३. दुल्लहा उ मुहादाई मुहाजीवी वि दुल्लहा। मुहादाई मुहाजीवी दो वि गच्छंति सोग्गइं ॥१३१॥त्ति बेमि ॥ **॥ पिंडेसणऽज्झयणे बीओ उद्देसओ** २१४. पडिग्गहं संलिहित्ताणं लेवमायाए संजए। दुगंधं वा सुगंधं वा सव्वं भुंजे न

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छड्डए ॥१॥ २१५. सेज्जा निसीहियाए समावन्नो य गोयरे। अयावयट्ठा भोच्चा णं जइ तेण न संथरे ॥२॥ २१६. तओ कारणमुप्पन्ने भत्त-पाणं गवेसए। विहिणा पुव्ववुत्तेण इमेणं उत्तरेण य ॥३॥ २१७. कालेण निक्खमे भिक्खू कालेण य पडिक्कमे। अकालं च विवज्जेत्ता काले कालं समायरे ॥४॥ २१८. अकाले चरसि भिक्खू! कालं न पडिलेहसि। अप्पाणं च किलामेसि अन्निवेसं च गरहसि ॥५॥ २१९. सइ काले चरे भिक्खू कुज्जा पुरिसकारियं। अलाभो त्ति न साएज्जा तवो त्ति अहियासए ॥६॥ २२०. तहेवुच्चावया पाणा भत्तट्ठाए समागया। तउज्जुयं न गच्छेज्जा जयमेव परक्कमे ॥७॥ २२१. गोयरग्ग पविट्ठो उ न निसीएज्ज कत्थई। कहं च न पबंधेज्जा चिट्ठित्ताण व संजए ॥८॥ २२२. अग्गलं फलिहं दारं कवाडं वा वि संजए। अवलंबिया न चिट्ठेज्जा गोयरग्गगओ मुणी ॥९॥ २२३. समणं माहणं वा वि किविणं वा वणीमगं। उवसंकमंतं भत्तट्ठा पाणट्ठाए व संजए ॥१०॥ २२४. तं अइक्कमित्तु न पविसे न चिट्ठे चक्खुगोयरे। एगंतमवक्कमित्ता तत्थ चिट्ठेज्ज संजए ॥११॥ २२५. वणीमगस्स वा तस्स दायगस्सुभयस्स वा। अप्पत्तियं सिया होज्जा लहुत्तं पवयणस्स वा ॥१२॥ २२६. पडिसेहिए व दिन्ने वा तओ तम्मि नियत्तिए। उवसंकमेज्ज भत्तट्ठा पाणट्ठाए व संजए ॥१३॥ २२७. उप्पलं पउमं वा वि कुमुयं वा मगदंतियं। अन्नं वा पुप्फ सच्चित्तं तं च संलुचिया दए ॥१४॥ २२८. तारिसं भत्त-पाणं तु संजयाण अकप्पियं। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥१५॥ २२९. उप्पलं पउमं वा वि कुमुयं वा मगदंतियं। अन्नं वा पुप्फ सच्चित्तं तं च सम्मद्दिया दए ॥१६॥ २३०. तारिसं भत्त-पाणं तु संजयाण अकप्पियं। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥१७॥ २३१. सालुयं वा विरालियं कुमुउप्पलनालियं। मुणालियं सासवनालियं उच्छुक्खंडं अनिव्वुडं ॥१८॥ २३२. तरुणगं वा पवालं रुक्खस्स तणगस्स वा। अन्नस्स वा वि हरियस्स आमगं परिवज्जए ॥१९॥ २३३. तरुणियं वा छेवाडिं आमियं भज्जियं सइं। देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥२०॥ २३४. तहा कोलमणस्सिन्नं वेलुयं कासवनालियं। तिलप्पडगं नीमं आमगं परिवज्जए ॥२१॥ २३५. तहेव चाउलं पिट्ठं वियडं वा तत्तनिव्वुडं। तिलपिट्ठ पूइपिन्नागं आमगं परिवज्जए ॥२२॥ २३६. कविट्ठं माउलिंगं च मूलगं मूलगत्तियं। आमं असत्परिणयं मणसा वि न पत्थए ॥२३॥ २३७. तहेव फलमंथूणि बीयमंथूणि जाणिया। बिहेलगं पियालं च आमगं परिवज्जए ॥२४॥ २३८. समुदाणं चरे भिक्खू कुलं उच्चावयं सया। नीयं कुमइक्कम्म ऊसढं नामधारए ॥२५॥ २३९. अदीणो वित्तिमेसेज्जा न विसीएज्ज पंडिए। अमुच्छिओ भोयणम्मि मायन्ने एसणारए ॥२६॥ २४०. बहुं परघरे अत्थि विविहं खाइम-साइमं। न तत्थ पंडिओ कुप्पे इच्छा देज्ज परो न वा ॥२७॥ २४१. सयणाऽऽसण वत्थं वा भत्त-पाणं व संजए। अदेंतस्स न कुप्पेज्जा पच्चक्खे वि य दीसओ ॥२८॥ २४२. इत्थियं पुरिसं वा वि डहरं वा महल्लगं। वंदमाणं न जाएज्जा नो य णं फरुसं वए ॥२९॥ २४३. जे न वंदे न से कुप्पे वंदिओ न समुक्कसे। एवमन्नेसमाणस्स सामण्णमणुचिट्ठई ॥३०॥ २४४. सिया एगइओ लद्धुं लोभेण विणिगूहई। मा मेयं दाइयं संतं दट्ठूणं सयमायए ॥३१॥ २४५. अत्तट्ठगुरुओ लुद्धो बहुं पावं पकुव्वई। दुत्तोसओ य से होइ नेव्वाणं च न गच्छई ॥३२॥ २४६. सिया एगइओ लद्धुं विविहं पाण-भोयणं। भद्दगं भद्दगं भोच्चा विवण्णं विरसमाहरे ॥३३॥ २४७. जाणंतु ता इमे समणा आययट्ठी अयं मुणी। संतुट्ठो सेवई पंतं लूहवित्ती सुतोसओ ॥३४॥ २४८. पूयणट्ठा जसोकामी माण-सम्माणकामए। बहुं पसवई पावं मायासल्लं च कुव्वई ॥३५॥ २४९. सुरं वा मेरगं वा वि अन्नं वा मज्जगं रसं। ससक्खं न पिबे भिक्खू जसं सारक्खमप्पणो ॥३६॥ २५०. पियाएगइओ तेणो न मे कोइ वियाणइ। तस्स पस्सह दोसाइं नियडिं च सुणेह मे ॥३७॥ २५१. वड्ढई सोंडिया तस्स मायामोसं च भिक्खुणो। अयसो य अनिव्वाणं सययं च असाहुया ॥३८॥ २५२. निच्चुविग्गो जहा तेणो अत्तकम्मेहि दुम्मई। तारिसो मरणंते वि नाऽऽराहेइ संवरं ॥३९॥ २५३. आयरिए नाऽऽराहेइ समणे यावि तारिसो। गिहत्था वि णं गरहंति जेण जाणंति तारिसं ॥४०॥ २५४. एवं तु अगुणप्पेही गुणाणं च विवज्जए। तारिसो मरणंते वि नाऽऽराहेइ संवरं ॥४१॥ २५५. तवं कुव्वइ मेहावी पणीयं वज्जए रसं। मज्ज-प्पमायविरओ तवस्सी अइउक्कसो ॥४२॥ २५६. तस्स पस्सह कल्लाणं अणेगसाहुपूइयं। विउलं अत्थसंजुत्तं कित्तइस्सं सुणेह मे ॥४३॥ २५७. एवं तु गुणप्पेही अगुणाणं विवज्जए। तारिसो मरणंते वि आराहेइ संवरं ॥४४॥ २५८. आयरिए आराहेइ समणे यावि तारिसो। गिहत्था वि णं पूयंति जेण जाणंति तारिसं ॥४५॥ २५९. तवतेणे वइतेणे रूवतेणे य जे नरे। आयार-भावतेणे य कुव्वई देवकिब्बिसं ॥४६॥ २६०. लद्धूण वि देवत्तं उववन्नो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवकिब्बिसे। तत्थावि से न याणाइ किं मे किच्चा इमं फलं ? ॥४७॥ २६१. तत्तो वि से चइत्ताणं लब्भिही एलमूयगं। नरयं तिरिक्खजोणिं वा बोही तत्थ सुदुल्लहा ॥४८॥ २६२. एयं च दोसं दट्ठूणं नायपुत्तेण भासियं। अणुमायं पि मेहावी मायामोसं विवज्जए ॥४९॥ २६३. सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहिं संजयाण बुद्धाण सगासे। तत्थ भिक्खु सुप्पणिहिइंदिए तिव्वलज्जगुणवं विहरेज्जासि ॥५०॥त्ति बेमि ॥ ॥पिंडेसणाए बीओ उद्देसओ समत्तो ☆☆☆ ॥ पिंडेसणऽज्झयणं समत्तं ॥५॥

☆☆☆ ६ छट्ठं धम्म-ऽत्थ-कामऽज्झयणं ☆☆☆

२६४. नाण-दंसणसंपन्नं संजमे य तवे रयं। गणिमागमसंपन्नं उज्जाणम्मि समोसढं ॥१॥ २६५. रायणो रायमच्चा य माहणा अदुव खत्तिया। पुच्छंति निहुयऽप्पाणो कहं मे आयरगोयरो ? ॥२॥ २६६. तेसिं सो निहुओ दंतो सव्वभूयसुहावहो। सिक्खाए सुसमाउत्तो आइक्खइ वियक्खणो ॥३॥ २६७. हंदि ! धम्म-ऽत्थ-कामाणं निग्गंथाणं सुणेह मे। आयार-गोयरं भीमं सयलं दुरहिट्ठियं ॥४॥ २६८. नऽन्नत्थ एरिसं वुतं जं लोए परमदुच्चरं। विपुलट्ठाणभाइस्स न भूयं न भविस्सई ॥५॥ २६९. सखुड्डग-वियत्ताणं वाहियाणं च जे गुणा। अखंड-फुडिया कायव्वा तं सुणेह जहा तहा ॥६॥ २७०. दस अट्ठ य ठाणाइं जाइं बालोऽसरज्झई। तत्थं अन्नयरे ठाणे निग्गंथत्ताओ भस्सई ॥७॥ २७१. तत्थिमं पढमं ठाणं महावीरेण देसियं। अहिंसा निउणा दिट्ठा सव्वभूएसु संजमो ॥८॥ २७२. जावंति लोए पाणा तसा अदुव थावरा। तं जाणमजाणं वा न हणे नो वि घायए ॥९॥ २७३. सव्वजीवा वि इच्छंति जीविउं न मरिज्जिउं। तम्हा पाणवहं घोरं निग्गंथा वज्जयंति णं ॥१०॥ २७४. अप्पणट्ठा परट्ठा वा कोहा वा जइ वा भया। हिंसगं न मुसं बूया नो वि अन्नं वयावए ॥११॥ २७५. मुसावाओ य लोगम्मि सव्वसाहूहिं गरिहिओ। अविस्सासो य भूयाणं तम्हा मोसं विवज्जए ॥१२॥ २७६. चित्तमंतमचित्तं वा अप्पं वा जइ वा बहुं। दंतसोहणमेत्तं पि ओग्गहं सि अजाइया ॥१३॥ २७७. तं अप्पणा न गेण्हंति नो वि गेण्हावए परं। अन्नं वा गेण्हमाणं पि नाणुजाणंति संजया ॥१४॥ २७८. अबंभचरियं घोरं पमायं दुरहिट्ठियं। नाऽऽयरंति मुणी लोए भेयाययणवज्जिणो ॥१५॥ २७९. मूलमेयमहम्मस्स महादोसमुस्सयं। तम्हा मेहुणसंसग्गं निग्गंथा वज्जयंति णं ॥१६॥ २८०. विडमुब्भेइमं लोणं तेल्लं सप्पिं च फाणियं। न ते सन्निहिमिच्छंति नायपुत्तवओरया ॥१७॥ २८१. लोभस्सेसऽणुफासो मन्ने अन्नयरामवि। जे सिया सन्निही कामे गिही, पव्वइए न से ॥१८॥ २८२. जं पि वत्थं व पायं वा कंबलं पायपुछणं। तं पि संजम-लज्जट्ठा धारेंति परिहरेंति य ॥१९॥ २८३. न सो परिग्गहो वुत्तो नायपुत्तेण ताइणा। मुच्छा परिग्गहो वुत्तो इइ वुत्तं महेसिणा ॥२०॥ २८४. सव्वत्थुवहिणा बुद्धा संरक्खणपरिग्गहे। अवि अप्पणो वि देहम्मि नाऽऽयरंति ममाइयं ॥२१॥ २८५. अहो ! निच्चं तवोकम्मं सव्वबुद्धेहि वण्णियं। जा य लज्जासमा वित्ती एगभत्तं च भोयणं ॥२२॥ संतिमे सुहुमा पाणा तसा अदुव थावरा। जाइं राओ अपासंतो कहमेसणियं चरे ? ॥२३॥ २८७. उदओल्लं बीयसंसत्तं पाणा निव्वडिया महिं। दिया ताइं विवज्जेज्जा राओ तत्थ कहं चरे ? ॥२४॥ २८८. एयं च दोसं दट्ठूणं नायपुत्तेण भासियं। सव्वाहारं न भुंजंति निग्गंथा राइभोयणं ॥२५॥ २८९. पुढविकायं न हिंसंति मणसा वयस कायसा। तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥२६॥ २९०. पुढविकायं विहिंसंतो हिंसई तु तदस्सिए। तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥२७॥ २९१. तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दोग्गइवड्ढणं। पुढविकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥२८॥ २९२. आउकायं न हिंसति मणसा वयस कायसा। तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥२९॥ २९३. आउकायं विहिंसंतो हिंसई उ तदस्सिए। तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥३०॥ २९४. तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दोग्गइवड्ढणं। आउकायसमारंभं जावजीवाए वज्जए ॥३१॥ २९५. जायतेयं न इच्छंति पावगं जलइत्तए। तिक्खमन्नयरं सत्थं सव्वओ वि दुरासयं ॥३२॥ २९६. पाईणं पडिणं वा वि उड्ढं अणुदिसामवि। अहे दाहिणाओ वा वि दहे उत्तरओ वि य ॥३३॥ २९७. भूयाणं एसमाघाओ हव्ववाहो, न संसओ। तं पईव-पयावट्ठा संजया किंचि नाऽऽरभे ॥३४॥ २९८. तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दोग्गइवड्ढणं। तेउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥३५॥ २९९. अनिलस्स समारंभं बुद्धा मन्नंति तारिसं। सावज्जबहुलं चेयं नेयं ताईहि सेवियं ॥३६॥ ३००. तालियंटेण पत्तेण साहाविहुयणेण वा। न ते वीइउमिच्छंति वीयावेऊण वा परं ॥३७॥ ३०१. जं पि वत्थं व पायं वा कंबलं पायपुंछणं। न ते वायमुईरंति जयं परिहरंति

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

य ॥३८॥ ३०२. तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दोग्गइवड्ढणं। वाउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥३९॥ ३०३. वणस्सइं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा। तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥४०॥ ३०४. वणस्सइं विहिंसंतो हिंसई उ तदस्सिए। तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४१॥ ३०५. तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दोग्गइवड्ढणं। वणस्सइसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥४२॥ ३०६. तसकायं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा। तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥४३॥ ३०७. तसकायं विहिंसंतो हिंसई उ तदस्सिए। तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४४॥ ३०८. तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दोग्गइवड्ढणं। तसकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥४५॥ ३०९. जाइं चत्तारिऽभोज्जाइं इसिणाऽऽहारमाइणि। ताइं तु विवज्जेंतो संजमं अणुपालए ॥४६॥ ३१०. पिंडं सेज्जं च वत्थं च चउत्थं पायमेव य। अकप्पियं न इच्छेज्जा पडिग्गाहेज्ज कप्पियं ॥४७॥ ३११. जे नियागं ममायंति कीयमुद्देसियाऽऽहडं। वहं ते समणुजाणंति इइ वुत्तं महेसिणा ॥४८॥ ३१२. तम्हा असण-पाणाई कीयमुद्देसियाऽऽहडं। वज्जयंति ठियप्पाणो निग्गंथा धम्मजीविणो ॥४९॥ ३१३. कंसेसु कंसपाएसु कुंडमोएसु वा पुणो। भुंजंतो असण-पाणाई आयारा परिभस्सई ॥५०॥ ३१४. सीओदगसमारंभे मत्तधोयणछड्डणे। जाइं छण्णंति भूयाइं सो तत्थ दिट्ठो असंजमो ॥५१॥ ३१५. पच्छाकम्मं पुरेकम्मं सिया तत्थ न कप्पई। एयमट्ठं न भुंजंति निग्गंथा गिहिभायणे ॥५२॥ ३१६. आसंदी-पलियंकेसु मंच-मासालएसु वा। आणायरियमज्जाणं आसइत्तु सइत्तु वा ॥५३॥ ३१७. नाऽऽसंदी-पलियंकेसु न निसेज्जा न पीढए। निग्गंथाऽपडिलेहाए बुद्धवुत्तमहिट्ठगा ॥५४॥ ३१८. गंभीरविजया एए पाणा दुप्पडिलेहगा। आसंदी पलियंको य एयमट्ठं विवज्जिया ॥५५॥ ३१९. गोयरग्गपविट्ठस्स निसेज्जा जस्स कप्पई। इमेरिसमणायारं आवज्जइ अबोहियं ॥५६॥ ३२०. विवत्ती बंभचेरस्स पाणाणं च वहे वहो। वणीमगपडिग्घाओ पडिकोहो य अगारिणं ॥५७॥ ३२१. अगुत्ती बंभचेरस्स इत्थीओ यावि संकणं। कुसीलवड्ढणं ठाणं दूरओ परिवज्जए ॥५८॥ ३२२. तिण्हमनकनयरागस्स निसेज्जा जस्स कप्पई। जराए अभिभूयस्स वाहियस्स तवस्सिणो ॥५९॥ ३२३. वाहिओ वा अरोगी वा सिणाणं जो उ पत्थए। वोक्कंतो होइ आयारो जढो हवइ संजमो ॥६०॥ ३२४. संतिमे सुहुमा पाणा घसासु भिलुगासु य। जे उ भिक्खू सिणायंतो वियडेणुप्पिलावए ॥६१॥ ३२५. तम्हा ते न सिणायंति सीएण उसिणेण वा। जावज्जीवं वयं घोरं असिणाणमहिट्ठगा ॥६२॥ ३२६. सिणाणं अदुवा कक्कं लोद्धं पउमगाणि य। गायस्सुव्वट्टणट्ठाए नाऽऽसरंति कयाइ वि ॥६३॥ ३२७. नगिणस्स वा वि मुंडस्स दीहरोम-नहंसिणो। मेहुणा उवसंतस्स किं विभूसाए कारियं ? ॥६४॥ ३२८. विभूसावत्तियं भिक्खू कम्मं बंधइ चिक्कणं। संसारसायरे घोरे जेणं पडइ दुरुत्तरे ॥६५॥ ३२९. विभूसावत्तियं चेयं बुद्धा मन्नंति तारिसं। सावज्जबहुलं चेयं नेयं ताईहि सेवियं ॥६६॥ ३३०. खवेंति अप्पाणममोहदंसिणो तवे रया संजमे अज्जवे गुणे। धुणंति पावाइं पुरेकडाइं नवाइं पावाइं न ते करेंति ॥६७॥ ३३१. सओवसंता अममा अकिंचणा सविज्जविज्जाणुगया जसंसिणो। उउप्पसन्ने विमले व चंदिमे सिद्धिं विमाणाइं उवेंति ताइणो ॥६८॥ त्ति बेमि ॥ **☆☆☆॥ धम्म-ऽत्थ-कामऽज्झयणं छट्ठं समत्तं ॥६॥ ☆☆☆ ७ सत्तमं वक्कसुद्धिअज्झयणं ☆☆☆** ३३२. चउण्हं खलु भासाणं परिसंखाय पन्नवं। दोण्हं तु विणयं सिक्खे दो न भासेज्ज सव्वसो ॥१॥ ३३३. जा य सच्चा अवत्तव्वा सच्चामोसा य जा मुसा। जा य बुद्धेहिऽणाइन्ना न तं भासेज्ज पण्णवं ॥२॥ ३३४. असच्चमोसं सच्चं च अणवज्जमकक्कसं। समुप्पेहमसंदिद्धं गिरं भासेज्ज पण्णवं ॥३॥ ३३५. एयं च अट्ठमन्नं वा जं तु नामेइ सासयं। स भासं सच्चमोसं पि तं पि धीरो विवज्जए ॥४॥ ३३६. वितहं पि तहामुत्तिं जं गिरं भासए नरो। तम्हा सो पुट्ठो पावेणं, किं पुणं जो मुसं वए?॥५॥ ३३७. तम्हा गच्छामो वक्खामो अमुगं वा णे भविस्सई। अहं वा णं करिस्सामि एसो वा णं करिस्सई ॥६॥ ३३८. एवमाई उ जा भासा एसकालम्मि संकिया। संपयाईयमट्ठे वा तं पि धीरो विवज्जए ॥७॥ ३३९. अईयम्मि य कालम्मी पच्चुप्पन्नमणागए। जमट्ठं तु जाणेज्जा 'एवमेयं' ति नो वए ॥८॥ ३४०. अईयम्मि य कालम्मि पच्चुप्पन्नमणागए। जत्थ संका भवे तं तु 'एवमेयं' ति नो वए ॥९॥ ३४१. अईयम्मि य कालम्मि पच्चुप्पन्नमणागए। निस्संकियं भवे जं तु 'एवमेयं' ति निद्दिसे ॥१०॥ ३४२. तहेव फरुसा भासा गुरुभूओवघाइणी। सच्चा वि सा न वत्तव्वा जओ पावस्स

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आगमो ॥११॥ ३४३. तहेव काणं 'काणे' त्ति पंडगं 'पंडगे' त्ति वा। वाहियं वा वि 'रोगि' त्ति तेणं 'चोरे' त्ति नो वए ॥१२॥ ३४४. एएऽन्नेण अट्ठेण परो जेणुवहम्मई। आयारभावदोसण्णू ण तं भासेज्ज पण्णवं ॥१३॥ ३४५. तहेव 'होले' 'गोले' त्ति 'साणे' वा 'वसुले' त्ति य। 'दमए' 'दूहए' वा वि न तं भासेज्ज पण्णवं ॥१४॥ ३४६. अज्जिए पज्जिये वा वि अम्मो माउसिय त्ति वा। पिउस्सिए भाइणेज्ज त्ति धूए नत्तुणिए त्ति य ॥१५॥ ३४७. हले हले त्ति अन्ने त्ति भट्टे सामिणि गोमिणि। होले गोले वसुले त्ति इत्थियं नेवमालवे ॥१६॥ ३४८. नामधेज्जेण णं बूया इत्थीगोत्तेण वा पुणो। जहारिहमभिगिज्झ आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥१७॥ ३४९. अज्जए पज्जए वा वि बप्पो चुल्लपिउ त्ति य। माउला भाइणेज्ज त्ति पुत्ते णत्तुणिय त्ति य ॥१८॥ ३५०. हे हो हले त्ति अन्ने त्ति भट्टा सामिय गोमिय। होल गोल वसुल त्ति पुरिसं नेवमालवे ॥१९॥ ३५१. नामधेज्जेण णं बूया पुरिसगोत्तेण वा पुणो। जहारिहमभिगिज्झ आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥२०॥ ३५२. पंचिंदियाण पाणाणं एस इत्थी अयं पुमं। जाव णं विजाणेज्जा ताव जाइ त्ति आलवे ॥२१॥ ३५३. तहेव मणुसं पसुं पक्खिं वा वि सरीसिवं। थूले पमेइले वज्झे पाइमे त्ति य नो वए ॥२२॥ ३५४. परिवूढे त्ति णं बूया बूया उवचिए त्ति य। संजए पीणिए वा वि महाकाए त्ति आलवे ॥२३॥ ३५५. तहेव गाओ दुज्झाओ दम्मा गोरहग त्ति य। वाहिमा रहजोग्ग त्ति नेवं भासेज्ज पण्णवं ॥२४॥ ३५६. जुवंगवे त्ति णं बूया धेणुं रसदय त्ति य। रहस्से महल्लए वा वि वए संवहणे त्ति य ॥२५॥ ३५७. तहेव गंतुमुज्जाणं पव्वयाणि वणाणि य। रुक्खा महल्ल पेहाए नेवं भासेज्ज पण्णवं ॥२६॥ ३५८. अलं पासायखंभाणं तोरणाण गिहाण य। फलिह-ऽग्गल-नावाणं अलं उदगदोणिणं ॥२७॥ ३५९. पीढए चंगबेरे य नंगले मइयं सिया। जंतलट्ठी व नाभी वा गंडिया व अलं सिया ॥२८॥ ३६०. आसणं सयणं जाणं होज्जा वा किंचुवस्सए। भूओवघाइणिं भासं नेवं भासेज्ज पण्णवं ॥२९॥ ३६१. तहेव गंतुमुज्जाणं पव्वयाणि वणाणि य। रुक्खा महल्ल पेहाए एवं भासेज्जा पण्णवं ॥३०॥ ३६२. जाइमंता इमे रुक्खा दीहवट्टा महालया। पयायसाला विडिमा वए दरिसणि त्ति य। ३६३. तहा फलाइं पक्काइं पायखज्जाइं नो वए। वेलोइयाइं टालाइं वेहिमाइं ति नो वए ॥३२॥ ३६४. असंथडा इमे अंबा बहुनिव्वट्टिमाफला। वएज्जा बहुसंभूया भूयरूव त्ति वा पुणो ॥३३॥ ३६५. तहोसहीओ पक्काओ नीलियाओ छवी इ य। लाइमा भज्जिमाओ त्ति पिहुखज्ज त्ति नो वए ॥३४॥ ३६६. विरूढा बहुसंभूया थिरा ऊसढा वि य। गब्भियाओ पसूयाओ ससाराओ त्ति आलवे ॥३५॥ ३६७. तहेव संखडिं नच्चा किच्चं कज्जं ति नो वए। तेणगं वा वि वज्झे त्ति सुतित्थे त्ति य आवगा ॥३६॥ ३६८. संखडिं संखडिं बूया पणियट्ठं ति तेणगं। बहुसमाणि तित्थाणि आवगाणं वियागरे ॥३७॥ ३६९. तहा नईओ पुण्णाओ कायतिज्ज त्ति नो वए। नावाहिं तारिमाओ त्ति पाणिपेज्ज त्ति नो वए ॥३८॥ ३७०. बहुवाहडा अगाहा बहुसलिलुप्पिलोदगा। बहुवित्थडोदगा यावि एवं भासेज्जा पण्णवं ॥३९॥ ३७१. तहेव सावज्जं जोगं परस्सऽट्ठाए निट्ठियं। कीरमाणं ति वा णच्चा सावज्जं नाऽऽलवे मुणी ॥४०॥ ३७२. सुकडे त्ति सुपक्के त्ति सुछिन्ने सुहडे मडे। सुनिट्ठिए सुलट्ठे त्ति सावज्जं वज्जए मुणी ॥४१॥ ३७३. पयत्तपक्के त्ति व पक्कमालवे, पयत्तछिन्ने त्ति व छिन्नमालवे। पवत्तलट्ठे त्ति व कम्महेउयं, पहारगाढे त्ति व गाढमालवे ॥४२॥ ३७४. सव्वुक्कस्सं परग्घं वा अउलं नत्थि एरिसं। अचक्कियमवत्तव्वं अचियतं चेव णो वए ॥४३॥ ३७५. सव्वमेयं वइस्सामि सव्वमेयं ति नो वए। अणुवीइ सव्वं सव्वत्थ एवं भासेज्ज पण्णवं ॥४४॥ ३७६. सुक्कीयं वा सुविक्कीयं अकेज्जं केज्जमेव वा। इमं गेण्ह, इमं मुंच पणियं नो वियागरे ॥४५॥ ३७७. अप्पग्घे वा महग्घे वा कए व विक्कए वि वा। पणियट्ठे समुप्पन्ने अणवज्जं वियागरे ॥४६॥ ३७८. तहेवाऽसंजयं धीरो आस एहि करेहि वा। सय चिट्ठ वयाहि त्ति नेवं भासेज्ज पण्णवं ॥४७॥ ३७९. बहवे इमे असाहू लोए वुच्चंति साहुणो। न लवे असाहुं साहुं ति साहुं साहुं ति आलवे ॥४८॥ ३८०. णाण-दंसणसंपन्नं संजमे य तवे रयं। एवंगुणसमाउत्तं संजयं साहुमालवे ॥४९॥ ३८१. देवाणं मणुयाणं च तिरियाणं च वुग्गहे। अमुयाण जओ होउ, मा वा होउ त्ति नो वए ॥५०॥ ३८२. वाओ वुट्ठं व सीउण्हं खेमं धायं सिवं ति वा। पया णु होज्ज एयाणि ? मा वा होउ त्ति नो वए ॥५१॥ ३८३. तहेव मेहं व नहं व माणवं न देवदेव त्ति गिरं वएज्जा। समुच्छिए उन्नए वा पओदे वएज्जा वा 'वुट्ठे बलाहए' त्ति ॥५२॥ ३८४. 'अंतलिक्खे' त्ति णं बूया, 'गुज्झाणुचरियं' ति य। रिद्धिमंतं नरं दिस्स 'रिद्धिमंतं' ति आलवे ॥५३॥ ३८५. तहेव सावज्जणुमोयणी गिरा ओहारिणी जा य परोवघाइणी। से कोह लोह भयसा व माणवो न हासमाणो वि गिरं वएज्जा ॥५४॥ ३८६. स-वक्कसुद्धिं समुपेहिया मुणी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गिरं च दुट्ठं परिवज्जए सया। मियं अदुट्ठं अणुवीई भासए सयाण मज्झे लहई पसंसणं ॥५५॥ ३८७. भासाए दोसे य गुणे य जाणिया तीसे य दुट्ठाए विवज्जए सया। छसु संजए सामणिए सया जए वएज्ज बुद्धे हियमाणुलोमियं ॥५६॥ ३८८. परिक्खभासी सुसमाहिइंदिए चउक्कसायावगए अणिस्सिए। स निद्धुणे धुण्णमलं पुरेकडं आराहए लोगमिणं तहा परं ॥५७॥ ति बेमि ॥ ☆☆☆ **॥ वक्कसुद्धिअज्झयणं सत्तमं समत्तं ॥७॥ ☆☆☆ ८ अट्ठमं आयारप्पणिहिअज्झयणं** ☆☆☆ ३८९. आयारपणिहिं लद्धुं जहा कायव्व भिक्खुणा। तं भे उदाहरिस्सामि आणुकुव्विं सुणेह मे ॥१॥ ३९०. पुढविदगअगाणिमारुयतणरुक्खसबीयगा। तसा य पाणा जीव त्ति इइ वुत्तं महेसिणा ॥२॥ ३९१. तेसिं अच्छणजोएण निच्चं होयव्वयं सया। मणसा कायवक्केण एवं भवइ संजए ॥३॥ ३९२. पुढविं भित्तिं सिलं लेलुं नेव भिंदे न संलिहे। तिविहेण करणजोएण संजए सुसमाहिए ॥४॥ ३९३. सुद्धपुढवीए न निसिए ससरक्खम्मि य आसणे। पमज्जित्तु निसीएज्जा जाणित्तु जाइयोग्गहं ॥५॥ ३९४. सीओदगं न सेवेज्जा सिला वुट्ठं हिमाणि य। उसिणोदगं तत्तफासुयं पडिगाहेज्ज संजए ॥६॥ ३९५. उदओल्लं अप्पणो कायं नेव पुंछे न संलिहे। समुप्पेह तहाभूयं नो णं संघट्टए मुणी ॥७॥ ३९६. इंगालं अगणिं अच्चिं अलायं वा सजोइयं। न उंजेज्जा न घट्टेज्जा नो णं निव्वावए मुणी ॥८॥ ३९७. तालियंटेण पत्तेण साहविहुयणेण वा। न वीएज्ज अप्पणो कायं बाहिरं वा वि पोग्गलं ॥९॥ ३९८. तणरुक्खं न छिदेज्जा फलं मूलं व कस्सइ। आमगं विविहं बीयं मणसा वि न पत्थए ॥१०॥ ३९९. गहणेसु न चिट्ठेज्जा बीएसु हरिएसु वा। उदगम्मि तहा निच्चं उत्तिंग-पणगेसु वा ॥११॥ ४००. तसे पाणे न हिंसेज्जा वाया अदुव कम्मुणा। उवरओ सव्वभूएसु पासेज्ज विविहं जगं ॥१२॥ ४०१. अट्ठ सुहुमाइं पेहाए जाइं जाणित्तु संजए। दयाहिगारी भूएसु आस चिट्ठ सएहि वा ॥१३॥ ४०२. कयराइं अट्ठ सुहुमाइं ? जाइं पुच्छेज्ज संजए। इमाइं ताइं मेहावी आइक्खेज्ज वियक्खणे ॥१४॥ ४०३. सिणेहं १ पुप्फसुहुमं २ च पाणुत्तिंगं ३-४ तहेव य। पणगं ५ बीय ६ हरियं ७ च अंडसुहुमं ८ च अट्ठमं ॥१५॥ ४०४. एवमेयाणि जाणित्ता सव्वभावेण संजए। अप्पमत्ते जए निच्चं सव्विंदियसमाहिए ॥१६॥ ४०५. धुवं च पडिलेहेज्जा जोगसा पाय-कंबलं। सेज्जमुच्चारभूमिं च संथारं अदुवाऽऽसणं ॥१७॥ ४०६. उच्चारं पासवणं खेलं सिंघाण जल्लियं। फासुयं पडिलेहित्ता परिट्ठावेज्ज संजए ॥१८॥ ४०७. पविसित्तु परागारं पाणट्ठा भोयणस्स वा। जयं चिट्ठे, मियं भासे, न य रूवेसु मणं करे ॥१९॥ ४०८. बहुं सुणेइ कण्णहिं बहुं अच्छीहिं पेच्छइ। न य दिट्ठं सुयं सव्वं भिक्खू अक्खाउमरिहइ ॥२०॥ ४०९. सुयं वा जइ वा दिट्ठं न लवेज्जोवघाइयं। न य केणइ उवाएणं गिहिजोगं समायरे ॥२१॥ ४१०. निट्ठाणं रसनिज्जूढं भद्दगं पावगं ति वा। पुट्ठो वा अपुट्ठो वा लाभालाभं न निद्दिसे ॥२२॥ ४११. न य भोयणम्मि गिद्धो चरे उंछं अयंपिरो। अफासुयं न भुंजेज्जा कीयमुद्देसियाऽऽहडं ॥२३॥ ४१२. सन्निहिं च न कुव्वेज्जा अणुमायं पि संजए। मुहाजीवी असंबद्धे हवेज्ज जगनिस्सिए ॥२४॥ ४१३. लूहवित्ती सुसंतुट्ठे अप्पिच्छे सुहरे सिया। आसुरत्तं न गच्छेज्जा सोच्चाणं जिणासासणं ॥२५॥ ४१४. कण्णसोक्खेहिं सद्देहिं पेमं नाभिनिवेसए। दारुणं कक्कसं फासं काएण अहियासए ॥२६॥ ४१५. खुहं पिवासं दुस्सेज्जं सीउण्हं अरई भयं। अहियासे अव्वहिओ देहे दुक्खं महाफलं ॥२७॥ ४१६. अत्थंगयम्मि आइच्चे पुरत्था य अणुग्गए। आहारमइयं सव्वं मणसा वि न पत्थए ॥२८॥ ४१७. अतितिणे अचवले अप्पभासी मियासणे। हवेज्ज उयरे दंते थोवं लद्धुं न खिंसए ॥२९॥ ४१८. न बाहिरं परिभवे अत्ताणं न समुक्कसे। सुयलाभे न मज्जेज्जा जच्चा तवसि बुद्धिए ॥३०॥ ४१९. से जाणमजाणं वा कट्टु आहम्मियं पयं। संवरे खिप्पमप्पाणं बीयं तं न समायरे ॥३१॥ ४२०. अणायारं परक्कम्म नेव गूहे, न निण्हवे। सुई सया वियडभावे असंसत्ते जिइंदिए ॥३२॥ ४२१. अमोहं वयणं कुज्जा आयरियस्स महप्पणो। तं परिगिज्झ वायाए कम्मुणा उववायए ॥३३॥ ४२२. अधुवं जीवियं नच्चा सिद्धिमग्गं वियाणिया। विणियट्टेज्ज भोगेसु, आउं परिमियमप्पणो ॥३४॥ बलं थामं च पेहाए सद्धामारोग्गमप्पणो। खेत्तं कालं च विण्णाय तहऽप्पाणं निजुंजए॥ ४२३. जरा जाव न पीलई वाही जाव न वड्ढणं। जाविंदिया न हायंति ताव धम्मं समायरे ॥३५॥ ४२४. कोहं माणं च मायं च लोभं च पाववड्ढणं। वमे चत्तारि दोसे उ इच्छंतो हियमप्पणो ॥३६॥ ४२५. कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासाणो। माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥३७॥ ४२६. उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे। मायं चऽज्जवभावेण, लोभं संतोसओ जिणे ॥३८॥ ४२७. कोहो य माणो य अणिग्गहीया माया य लोभो य पवड्ढमाणा। चत्तारि एए कसिणा कसाया सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स ॥३९॥ ४२८. राइणिएसु विणयं पउंजे, धुवसीलयं सययं न हावएज्जा। कुम्मो व्व अल्लीण-पलीणगुत्तो परकमेज्जा तव-संजमम्मि ॥४०॥ ४२९. निद्दं च न बहुमन्नेज्जा, सप्पहासं विवज्जए। मिहोकहाहिं न रमे, सज्झायम्मि रओ सया ॥४१॥ ४३०. जोगं च समणधम्मम्मि जुंजे अणलसो धुवं। जुत्तो य समणधम्मम्मि अट्ठं लहइ अणुत्तरं ॥४२॥ ४३१. इहलोग-पारत्तहियं जेणं गच्छइ सोग्गइं। बहुसुयं पज्जुवासेज्जा, पुच्छेज्जऽत्थविणिच्छयं ॥४३॥ ४३२. हत्थं पायं च कायं च पणिहाय जिइंदिए। अल्लीणगुत्तो निसिए सगासे गुरुणो मुणी ॥४४॥ ४३३. न पक्खओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ। न य ऊरुं समासेज्जा चिट्ठेज्जा गुरुणंतिए ॥४५॥ ४३४. अपुच्छिओ न भासेज्जा भासमाणस्स अंतरा। पिट्ठमंसं न खाएज्जा, मायामोसं विवज्जए ॥४६॥ ४३५. अप्पत्तियं जेण सिया, आसु कुप्पेज्ज वा परो। सव्वसो तं न भासेज्जा भासं अहियगामिणिं ॥४७॥ ४३६. दिट्ठं मियं असंदिद्धं पडिपुण्णं वियं जियं। अयंपिर-मणुव्विग्गं भासं निसिर अत्तवं ॥४८॥ ४३७. आयारपण्णत्तिधरं दिट्ठिवायमहिज्जगं। वइविक्खलियं णच्चा न तं उवहसे मुणी ॥४९॥ ४३८. नक्खत्तं सुमिणं जोगं निमित्तं मंतभेसजं। गिहिणो तं न आइक्खे भूयाहिगरणं पयं ॥५०॥ ४३९. अन्नट्ठं पगडं लेणं भएज्ज सयणा-ऽऽसणं। उच्चारभूमिसंपन्न इत्थी-पसुविविज्जियं ॥५१॥ ४४०. विवित्ता य भवे सेज्जा, नारीणं न लवे कहं। गिहिसंथवं न कुज्जा, कुज्जा साहूहि संथवं ॥५२॥ ४४१. जहा कुक्कुडपोयस्स निच्चं कुललओ भयं। एवं खु बंभयारिस्स इत्थीविग्गहओ भयं ॥५३॥ ४४२. चित्तभित्तिं न निज्झाए, नारिं वा सुअलंकियं। भक्खरं पिव दट्ठूणं दिट्ठिं पडिसमाहरे ॥५४॥ ४४३. हत्थ-पायपडिच्छिन्नं कण्ण-नासविगप्पियं। अवि वाससइं नारिं बंभयारी विवज्जए ॥५५॥ ४४४. विभूसा इत्थिसंसग्गी पणीयरसभोयणं। नरस्सऽत्तगवेसिस्स विसं तालउडं जहा ॥५६॥ ४४५. अंग-पच्चंगसंठाणं चारुल्लविय-पेहियं। इत्थीणं तं न निज्झाए कामरागविवड्ढणं ॥५७॥ ४४६. विसएसु मणुण्णेसुं पेमं नाभिनिवेसए। अणिच्चं तेसिं विण्णाय परिणामं पोग्गलाण य ॥५८॥ ४४७. पोग्गलाण परीणामं तेसिं णच्चा जहा तहा। विणीयतण्हो विहरे सीईभूएण अप्पणा ॥५९॥ ४४८. जाए सद्धाए निक्खंतो परियायट्ठाणमुत्तमं। तमेव अणुपालेज्जा गुणे आयरियसम्मए ॥६०॥ ४४९. तवं चिमं संजमजोगयं च सज्झायजोगं च सया अहिट्ठए। सूरे व सेणाए समत्तमाउहे अलमप्पणो होइ अलं परेसिं ॥६१॥ ४५०. सज्झाय-सज्झाणरयस्स ताइणो अपावभावस्स तवे रयस्स। विसुज्झई जं से मलं पुरकडं समीरियं रुप्पमलं व जोइणा ॥६२॥ ४५१. से तारिसे दुक्खसहे जिइंदिए सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे। विरायइ कम्मघणम्मि अवगए कसिणऽब्भपुडावगमे व चंदिम ॥६३॥ त्ति बेमि ☆☆☆ **॥ आयारप्पणिहिअज्झयणं अट्ठमं समत्तं ॥८॥** ☆☆☆

९ नवमं विणयसमाहिअज्झयणं पढमो उद्देसो ☆☆☆

४५२. थंभा व कोहा व मय-प्पमाया गुरुस्सगासे विणयं न सिक्खे। सो चेव ऊ तस्स अभूइभावो फलं व कीयस्स वहाय होइ ॥१॥ ४५३. जे यावि मंदे त्ति गुरुं विइत्ता डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा। हीलंति मिच्छं पडिवज्जमाणा करेंति आसायण ते गुरूणं ॥२॥ ४५४. पगईए मंदा वि भवंति एगे डहरा वि य जे सुय-बुद्धोववेया। आयारमंता गुण-सुट्ठियप्पा जे हीलिया सिहिरिव भास कुज्जा ॥३॥ ४५५. जे यावि नागं डहरे त्ति नच्चा आसायए से अहियाय होइ। एवाऽऽयरियं पि हु हीलयंतो नियच्छइ जाइपहं खु मंदे ॥४॥ आसीविसो यावि परं सुरुट्ठो किं जीयनासाओ परं नु कुज्जा ?। आयरियपाया पुण अप्पसन्ना अबोहि आसायण नत्थि मोक्खो ॥५॥ ४५७. जो पावगं जलियमवक्कमेज्जा हासीविसं वा वि हु कोवएज्जा। जो वा विसं खायइ जीवियट्ठी एसोवमाऽऽसायणया गुरूणं ॥६॥ ४५८. सिया हु से पावय नो डहेज्जा आसीविसो वा कुविओ न भक्खे। सिया विसं हालहलं न मारे न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥७॥ ४५९. जो पव्वयं सिरसा भेत्तुमिच्छे सुत्तं व सीहं पडिबोहएज्जा। जो वा दए सत्तिअग्गे पहारं एसोवमाऽऽसायणया गुरूणं ॥८॥ ४६०. सिया हु सीसेण गिरिं पि भिंदे सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे। सिया न भिंदेज्ज व सत्तिअग्गं न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥९॥ ४६१. आयरियपाया पुण अप्पसन्ना अबोहि आसायण नत्थि मोक्खो। तम्हा अणाबाहसुहाभिकंखी गुरुप्पसायाभिमुहो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रमेज्जा ॥१०॥ ४६२. जहाऽऽहियग्गी जलणं नमंसे नाणाहुईमंतपयाभिसित्तं। एवाऽऽयरियं उवचिट्ठएज्जा अणतंणाणोवगओ वि संतो ॥११॥ ४६३. जस्संतिए धम्मपयाइं सिक्खे तस्संतिए वेणइयं पउंजे। सक्कारए सिरसा पंजलीओ कायग्गिरा भो ! मणसा य निच्चं ॥१२॥ ४६४. लज्जा दया संजमबंभचेरं कल्लाणभागिस्स विसोहिठाणं। जे मे गुरु सययमणुसासयंति ते हं गुरू सययं पूययामि ॥१३॥ ४६५. जहा निसंते तवणऽच्चिमाली पभासइ केवल भारहं तु। एवाऽऽयरिओ सुय-सील-बुद्धिए विरायई सुरमज्झे व इंदो ॥१४॥ ४६६. जहा ससी कोमुइजोगजुत्ते नक्खत्त-तारागणपरिवुडप्पा। खे सोहई विमले अब्भमुक्के एवं गणी सोहइ भिक्खुमज्झे ॥१५॥ ४६७. महागरा आयरिया महेसी समाहिजोगे सुय-सील-बुद्धिए। संपाविउकामे अणुत्तराइं आराहए तोसए धम्मकामी ॥१६॥ ४६८. सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं सुस्सूसए आयरिएऽप्पमत्तो। आराहइत्ताण गुणो अणेगे से पावई सिद्धिमणुत्तरं ति बेमि ॥१७॥ ☆☆☆ **॥ विणयसमाहीए पढमो उद्देसो समत्तो ॥९.१॥ विणयसमाहीए बीओ उद्देसो** ☆☆☆ ४६९. मूलाओ खंधप्पभवो दुमस्स खंधाओ पच्छा समुवेंति साला। साहप्पसाहा विरुहंति पत्ता तओ से पुप्फं च फलं रसो य ॥१॥ ४७०. एवं-धम्मस्स विणओ मूलं, परमो से मोक्खो। जेण कित्तिं सुयं सग्घं निस्सेसं चाभिगच्छई ॥२॥ ४७१. जे य चंडे मिए थद्धे दुव्वाई नियडीसढे। वुब्भई से अविणीयप्पा कट्ठं सोयगयं जहा ॥३॥ ४७२. विणयं पि जो उवाएण चोइओ कुप्पई नरो। दिव्वं सो सिरिमेज्जंति दंडेण पडिसेहए ॥४॥ ४७३. तहेव अविणीयप्पा उववज्झा हया गया। दीसंति दुहमेहंता आभिओगमुवट्ठिया ॥५॥ ४७४. तहेव सुविणीयप्पा उववज्झा हया गया। दीसंति सुहमेहंता इड्ढिं पत्ता महायसा ॥६॥ ४७५. तहेव अविणीयप्पा लोगंसि नर-नारिओ। दीसंति दुहमेहंता छाया ते विगलिंदिया ॥७॥ ४७६. दंड-सत्थपरिजूण्णा असब्भवयणेहि य। कलुणा विवन्नछंदा खुप्पिवासाए परिगया ॥८॥ ४७७. तहेव सुविणीयप्पा लोगंसि नर-नारिओ। दीसंति सुहमेहंता इड्ढिं पत्ता महायसा ॥९॥ ४७८. तहेव अविणीयप्पा देवा जक्खा य गुज्झगा। दीसंति दुहमेहंता आभिओगमुवट्ठिया ॥१०॥ ४७९. तहेव सुविणीयप्पा देवा जक्खा य गुज्झगा। दीसंति सुहमेहंता इड्ढिं पत्ता महायसा ॥११॥ ४८०. जे आयरिय-उवज्झायाणं सुस्सूसावयणंकरा। तेसिं सिक्खा पवड्ढंति जलसित्ता इव पायवा ॥१२॥ ४८१. अप्पणट्ठा परट्ठा वा सिप्पा णेउणियाणि य। गिहिणो उवभोगट्ठा इहलोगस्स कारणा ॥१३॥ ४८२. जेण बंधं वहं घोरं परियावं च दारुणं। सिक्खमाणा नियच्छंति जुत्ता ते ललिइंदिया ॥१४॥ ४८३. ते वि तं गुरुं पूयंति तस्स सिप्पस्स कारणा। सक्कारंति नमंसंति तुट्ठा निद्देसवत्तिणो ॥१५॥ ४८४. किं पुण जे सुयग्गाही अणंतहियकामए। आयरिया जं वए भिक्खू तम्हा तं नाइवत्तए ॥१६॥ ४८५. नीयं सेज्जं गइं ठाणं नीयं च आसणाणि य। नीयं च पाए वंदेज्जा, नीयं कुज्जा य अंजलिं ॥१७॥ ४८६. संघट्टइत्ता काएणं तहा उवहिणा मवि। 'खमेह अवराहं मे' वएज्जा 'न पुणो' त्ति य ॥१८॥ ४८७. दुग्गओ वा पओएणं चोइओ वहई रहं। एवं दुब्बुद्धि किच्चाणं वुत्तो वुत्तो पकुव्वई ॥१९॥ ४८८. कालं छंदोवयारं च पडिलेहित्ताण हेउहिं। तेण तेण उवाएणं तं तं संपडिवायए ॥२०॥ ४८९. विवत्ती अविणीयस्स, संपत्ती विणियस्स य। जस्सेयं दुहओ नायं सिक्खं से अभिगच्छई ॥२१॥ ४९०. जे यावि चंडे मइइड्ढिगारवे पिसुणे नरे साहस हीणपेसणे। अदिट्ठधम्मे विणए अकोविए असंविभागी न हु तस्स मोक्खो ॥२२॥ ४९१. निद्देसवत्ती पुण जे गुरूणं सुयत्थधम्मा विणयम्मि कोविया। तरित्तु ते ओहमिणं दुरुत्तरं खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गय ॥२३॥ त्ति बेमि ॥ ॥ ☆☆☆ **विणयसमाहीए बीओ उद्देसो समत्तो ॥९.२॥** ☆☆☆ **विणयसमाहीए तइओ उद्देसो** ☆☆☆ ४९२. आयरियऽग्गिमिवाऽऽहियग्गी सुस्सूसमाणो पडिजागरेज्जा। आलोइयं इंगियमेव णच्चा जो छंदमाराहयई, स पुज्जो ॥१॥ ४९३. आयारमट्ठा विणयं पउंजे सुस्सूसमाणो परिगिज्झ वक्कं। जहोवइट्ठं अभिकंखमाणो गुरुं तु नाऽऽसाययई, स पुज्जो ॥२॥ ४९४. राइणिएसु विणयं पउंजे डहरा वि य जे परियायजेट्ठा। नियत्तणे वट्टइ सच्चवाई ओवायवं वक्ककरे, स पुज्जो ॥३॥ ४९५. अन्नायउंछं चरई विसुद्धं जवणट्ठया समुयाणं च निच्चं। अलद्धुयं नो परिदेवएज्जा लद्धुं न विकंथयई, स पुज्जो ॥४॥ ४९६. संथार-सेज्जाऽऽसण-भत्त-पाणे अप्पिच्छया अइलाभे वि संते। जो एवमप्पाणऽभितोसएज्जा संतोसपाहन्नरए, स पुज्जो ॥६॥ ४९७. सक्का सहेउं आसाए कंटया अओमया उच्छहया नरेणं। अणासए जो उ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहेज्ज कंटए वईमए कण्णसरे, स पुज्जो ॥६॥ ४९८. मुहुत्तदुक्खा हु हवंति कंटया अओमया, ते वि तओ सुउद्धरा । वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि वेराणुबंधीणि महब्भयाणि ॥७॥ ४९९. समावयंता वयणाभिघाया कण्णंगया दुम्मणियं जणंति । धम्मो त्ति किच्चा परमग्गसूरे जिइंदिए जो सहई, स पुज्जो ॥८॥ ५००. अवण्णवायं च परम्मुहस्स पच्चक्खओ पडिणीयं च भासं । ओहारिणिं अप्पियकारिणिं च भासं न भासेज्ज सया, स पुज्जो ॥९॥ ५०१. अलोलुए अक्कुहए अमायी अपिसुणे यावि अदीणवित्ती । नो भावए नो वि य भावियप्पा अकोउहल्ले य सया, स पुज्जो ॥१०॥ ५०२. गुणेहिं साहू, अगुणेहऽसाहू गेण्हाहि साहूगुण, मुंचऽसाहू । वियाणिया अप्पगमप्पएणं जो राग-दोसेहिं समो, स पुज्जो ॥११॥ ५०३. तहेव डहरं व महल्लगं वा इत्थी पुमं पव्वइयं गिहिं वा । नो हीलए नो वि य खिंसएज्जा थंभं च कोहं च चए, स पुज्जो ॥१२॥ ५०४. जे माणिया सययं माणयंति जत्तेणं कन्नं व निवेसयंति । ते माणए माणरिहे तवस्सी जिइंदिए सच्चरए, स पुज्जो ॥१३॥ ५०५. तेसिं गुरूणं गुणसागराणं सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं । चरे मुणी पंचरए तिगुत्तो चउक्कसायावगए, स पुज्जो ॥१४॥ ५०६. गुरुमिह सययं पडियरिय मुणी जिणवयनिउणे अभिगमकुसले । धुणिय रय-मलं पुरेकडं भासुरमउलं गइं गय ॥१५॥त्ति बेमि ☆☆☆॥ **विणयसमाहीए तईओ उद्देसो समत्तो ॥९.३॥**

☆☆☆ विणयसमाहीए चउत्थो उद्देसो ☆☆☆ ५०७. सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता ॥१॥ ५०८. कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता ? ॥२॥ ५०९. इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता । तं जहा विणयसमाही १ सुयसमाही २ तवसमाही ३ आयारसमाही ४ ॥३॥ ५१०. विणए १ सुए २ तवे ३ य आयारे ४ निच्चं पंडिया । अभिरामयंति अप्पाणं जे भवंति जिइंदिया ॥४॥ ५११. चउव्विहा खलु विणयसमाही भवइ । तं जहा अणुसासिज्जंतो सुस्सूइ १ सम्मं संपडिवज्जइ २ वेयमाराहइ ३ न य भवइ अत्तसंपग्गहिए चउत्थं पयं भवइ ४ ॥५॥ ५१२. भवइ य एत्थ सिलोगो पेहेइ हियाणुसासणं १ सुस्सूई २ तं च पुणो अहिट्ठए ३ । न य माणमएण मज्जई ४ विणयसमाही आययट्ठिए १ ॥६॥ ५१३. चउव्विहा खलु सुयसमाही भवइ । तं जहा 'सुयं मे भविस्सइ' त्ति अज्झाइयव्वं भवइ १ 'एगग्गचित्तो भविस्सामि' त्ति अज्झाइयव्वं भवइ २ 'अप्पाणं ठावइस्सामि' त्ति अज्झाइयव्वं भवइ ३ 'ठिओ परं ठावइस्सामि' त्ति अज्झाइयव्वं भवइ चउत्थं पयं भवइ ४ ॥७॥ ५१४. भवइ य एत्थ सिलोगो नाण१ मेगग्गचित्तो २ य ठिओ ३ ठावयई परं ४ । सुयाणि य अहिज्जित्ता रओ सुयसमाहिए २ ॥८॥ ५१५. चउव्विहा खलु तवसमाही भवइ । तं जहा नो इहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा १ नो परलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा २ नो कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा ३ नऽन्नत्थ निज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा चउत्थं पयं भवइ ४ ॥९॥ ५१६. भवइ य एत्थ सिलोगो विविहगुणतवोरए य निच्चं भवइ निरासए निज्जरट्ठिए । तवसा धुणइ पुराणपावगं जुत्तो सया तवसमाहिए ॥१०॥ ५१७. चउव्विहा खलु आयारसमाही भवइ । तं जहा नो इहलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा १ नो परलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा २ नो कित्ति-वण्ण-सद्दसिलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा ३ नऽन्नत्थ आरहंतेहिं हेऊहिं आयारमहिट्ठेज्जा चउत्थं पयं भवई ४ ॥११॥ ५१८. भवइ य एत्थ सिलोगो जिणवयणरए अतितिणे पडिपुण्णाययमाययट्ठिए । आयारसमाहिसंवुडे भवइ य दंते भावसंधए ४ ॥१२॥ ५१९. अभिगम चउरो समाहिओ सुविसुद्धो सुसमाहियप्पओ । विउलहियसुहावहं पुणो कुव्वइ सो पयखेममप्पणो ॥१३॥ ५२०. जाई-मरणाओ मुच्चई, इत्थंथं च चएइ सव्वसो । सिद्धे वा भवइ सासए, देवे वा अप्परए महिड्ढिए ॥१४॥त्ति बेमि ॥ ॥विणयसमाहीए चउत्थो उद्देसो समत्तो ॥९.४॥☆☆☆ **॥विणयसमाहिअज्झयणं नवमं समत्तं ॥९॥☆☆☆ १० दसमं सभिक्खूअज्झयणं ☆☆☆** ५२१. निक्खम्ममाणाय बुद्धवयणे निच्चं चित्तसमाहिओ भवेज्जा । इत्थीण वसं न यावि गच्छे वंतं नो पडियावियति जे, स भिक्खू ॥१॥ ५२२. पुढविं न खणे न खणावए, सीओदगं पिए न पियावए । अगणिसत्थं जहा सुनिसियं तं न जले न जलावए जे, स भिक्खू ॥२॥ ५२३. अनिलेण न वीए न वीयावए हरियाणि न छिंदे न छिंदावए । बीयाणि सया विवज्जयंतो, सच्चित्तं नाऽऽहारए जे, स भिक्खू ॥३॥ ५२४. वहणं तस-थावराण होइ पुढवि-तण-

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कट्ठनिस्सियाणं। तम्हा उद्देसियं न भुंजे नो वि पए न पयावए जे, स भिक्खू ॥४॥ ५२५. रोइय नायपुत्तवयणं अत्तसमे मन्नेज्ज छप्पि काए। पंच य फासे महव्वयाइं पंचासवसंवरए जे, स भिक्खू ॥५॥ ५२६. चत्तारि वमे सया कसाए धुवजोगी य हवेज्ज बुद्धवयणे। अहणे निज्जायरूव-रयए गिहिजोगं परिवज्जए जे, स भिक्खू ॥६॥ ५२७. सम्मदिट्ठी सया अमूढे अत्थि हु नाणे तवे य संजमे य। तवसा धुणाई पुराणपावगं मण-वय-कायसुसंवुडे जे, स भिक्खू ॥७॥ ५२८. तहेव असणं पाणगं वा विविहं खाइम साइमं लभित्ता। होही अट्ठो सुए परे वा तं न निहे न निहावए जे, स भिक्खू ॥८॥ ५२९. तहेव असणं पाणगं वा विविहं खाइम साइमं लभित्ता। छंदिय साहम्मियाण भुंजे भोच्चा सज्झायरए य जे, स भिक्खू ॥९॥ ५३०. न य वुग्गहियं कहं कहेज्जा न य कुप्पे निहुइंदिए पसंते। संजमधुवजोगजुत्ते उवसंते अविहेडए जे, स भिक्खू ॥१०॥ ५३१. जो सहइ हु गामकंटए अक्कोस-पहार-तज्जणाओ य। भय-भेरवसद्दसप्पहासे समसुह-दुक्खसहे य जे, सभिक्खू ॥११॥ ५३२. पडिमं पडिवज्जिया मसाणे नो भाए भय-भेरवाइं दिस्स। विविहगुण-तवोरए य निच्चं न सरीरं चाभिकंखई जे, स भिक्खू ॥१२॥ ५३३. असइं वोसट्ठ-चत्तदेहे अक्कुट्ठे व हए व लूसिए वा। पुढविसमे मुणी हवेज्जा अनियाणे अकोउहल्ले य जे, स भिक्खू ॥१३॥ ५३४. अभिभूय काएण परीसहाइं समुद्धरे जाइपहाओ अप्पयं। विइत्तु जाई-मरणं महब्भयं तवे रए सामणिए जे, स भिक्खू ॥१४॥ ५३५. हत्थसंजए पायसंजए वायसंजए संजइंदिए। अज्झप्परए सुसमाहियप्पा सुत्तत्थं च वियाणई जे, स भिक्खू ॥१५॥ ५३६. उवहिम्मि अमुच्छिए अगढिए अण्णायउंछं पुलनिप्पुलाए। कय-विक्कय-सन्निहिओ विरए सव्वसंगावगए य जे, स भिक्खू ॥१६॥ ५३७. अलोलो भिक्खू न रसेसु गिद्धे उंछं चरे जीविय नाभिकंखे। इड्ढिं च सक्कारण पूयणं च चए ठियप्पा अणिहे जे, स भिक्खू ॥१७॥ ५३८. न परं वएज्जासि 'अयं कुसीले' जेणऽन्नो कुप्पेज्ज न तं वएज्जा। जाणिय पत्तेय पुण्ण-पावं अत्ताणं न समुक्कस्से जे, स भिक्खू ॥१८॥ ५३९. न जाइमत्ते न य रूवमत्ते न लाभमत्ते न सुएण मत्ते। मयाणि सव्वाणि विवज्जइत्ता धम्मज्झाणरए य जे, स भिक्खू ॥१९॥ ५४०. पवेयए अज्जपयं महामुणी धम्मे ठिओ ठावयई परं पि। निक्खम्म वज्जेज्ज कुसीललिंगं न यावि हासं कहए जे, स भिक्खू ॥२०॥ ५४१. तं देहवासं असुइं असासयं सया चए निच्चहियट्ठियप्पा। छिंदित्तु जाई-मरणस्स बंधणं उवेइ भिक्खू अपुणागमं गइं ॥२१॥ त्ति बेमि ॥ ॥ सभिक्खूअज्झयणं दसमं समत्तं ॥१०॥

☆☆☆११ पढमा रइवक्का चूला-एक्कारसमं अज्झयणं☆☆☆ ५४२. इह खलु भो ! पव्वइएणं उप्पन्नदुक्खेणं संजमे अरइसमावन्नचित्तेणं ओहणुप्पेहिणा अणोहाइएणं चेव हयरस्सि-गयंकुस-पोयपडागाभूयाइं इमाइं अट्ठारस ठाणाइं सम्मं संपडिलेहियव्वाइं भवंति। तं जहा हंभो ! दुस्समाए दुप्पजीवी १। लहुस्सगा इत्तिरिया गिहीणं कामभोगा २। भुज्जो य साइबहुला मणुस्सा ३। इमं च मे दुक्खं न चिरकालोवट्ठाइ भविस्सइ ४। ओमजणपुरक्कारे ५। वंतस्स य पडियाइयणं ६। अहरगइवासोवसंपया ७। दुल्लभे खलु भो गिहीणं धम्मे गिहवासमज्झे वसंताणं ८। आयंके से वहाय होइ ९। संकप्पे से वहाय होइ १०। सोवक्केसे गिहवासे, निरुवक्केसे परियाए ११। बंधे गिहवासे, मोक्खे परियाए १२। सावज्जे गिहवासे, अणवज्जे परियाए १३। बहुसाहारणा गिहीणं कामभोगा १४। पत्तेयं पुण्ण-पावं १५। अणिच्चे खलु भो ! मणुयाण जीविए कुसग्गजलबिंदुचंचले १६। बहुं च खलु पावं कम्मं पगडं १७। पावाणं च खलु भो ! कडाणं कम्माणं पुव्विं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं वेयइत्ता मोक्खो, नत्थि अवेयइत्ता, तवसा वा झोसइत्ता, अट्ठारसमं पयं भवइ १८ ॥१॥ ५४३. भवइ य एत्थ सिलोगो जया य चयइ धम्मं अणज्जो भोगकारणा। से तत्थ मुच्छिए बाले आयइं नावबुज्झई ॥२॥ ५४४. जया ओहाविओ होइ इंदो वा पडिओ छमं। सव्वधम्मपरिब्भट्ठो स पच्छा परितप्पई ॥३॥ ५४५. जया य वंदिमो होइ पच्छा होइ अवंदिमो। देवया व चुया ठाणा स पच्छा परितप्पई ॥४॥ ५४६. जया य पूइमो होइ पच्छा होइ अपूइमो। राया व रज्जपब्भट्ठो स पच्छा परितप्पइ ॥५॥ ५४७. जया य माणिमो होइ पच्छा होइ अमाणिमो। सेट्ठि व्व कव्वडे छूढो स पच्छा परितप्पई ॥६॥ ५४८. जया य थेरओ होइ समइक्कंतजोव्वणो। मच्छो व्व गलं गिलित्ता स पच्छा परितप्पई ॥७॥ जया य कुकुडुंबस्स कुतत्तीहिं विहम्मई। हत्थी व बंधणे बद्धो स पच्छा परितप्पई ॥ ५४९. पुत्त-दारपरिकिण्णो मोहसंताणसंतओ। पंकोसन्नो जहा नागो स पच्छा परितप्पई ॥८॥

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५५०. अज्ज याहं गणी होंतो भावियप्पा बहुस्सुओ। जइ हं रमंतो परियाए सामण्णे जिणदेसिए ॥९॥ ५५१. देवलोगसमाणो उ परियाओ महेसिणं। रयाणं, अरयाणं च महानिरयसालिसो ॥१०॥ ५५२. अमरोवमं जाणिय सोक्खमुत्तमं रयाण परियाए, तहाऽरयाणं। निरओवमं जाणिय दुक्खमुत्तमं रमेज्ज तम्हा परियाए पंडिए ॥११॥ ५५३. धम्मओ भट्ठं सिरिओ ववेयं जन्नग्गि विज्झायमिवऽप्पतेयं। हीलंति णं दुव्विहियं कुसीला दाढुद्धियं घोरविसं व नागं ॥१२॥ ५५४. इहेवऽधम्मो अयसो अकित्ती दुन्नामधेज्जं च पिहुज्जणम्मि। चुयस्स धम्माओ अहम्मसेविणो संभिन्नवित्तस्स य हेट्ठओ गई ॥१३॥ ५५५. भुंजित्तु भोगाइं पसज्झ चेयसा तहाविहं कट्टु असंजमं बहुं। गइं च गच्छे अणभिज्झियं दुहं, बोही य से नो सुलभा पुणो पुणो ॥१४॥ ५५६. इमस्स ता नेरइयस्स जंतुणो दुहोवणीयस्स किलेसवत्तिणो। पलिओवमं झिज्जइ सागरोवमं किमंग ! पुण मज्झ इमं मणोदुहं ? ॥१५॥ ५५७. न मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सई असासया भोगपिवास जंतुणो। न चे सरीरेण इमेणऽवेस्सई अवेस्सई जीवियपज्जवेण मे ॥१६॥ ५५८. जस्सेवमप्पा उ हवेज्ज निच्छिओ चएज्ज देहं, न उ धम्मसासणं। तं तारिसं नो पयलेंति इंदिया उवेंतवाया व सुदंसणं गिरिं ॥१७॥ ५५९. इच्चेव संपस्सिय बुद्धिमं नरो आयं उवायं विविहं वियाणिया। काएण वाया अदु माणसेणं तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिट्ठेज्जासि ॥१८॥त्ति बेमि ॥ ॥ रइवक्कचूला नाम चूला पढमा समत्ता ॥ ॥ एक्कारसमं रइवक्कऽज्झयणं समत्तं ॥११॥

☆☆☆१२ बिइया चूलिया चूला बारसमं अज्झयणं ☆☆☆

५६०. चूलियं तु पवक्खामि सुयं केवलिभासियं। जं सुणेत्तु सपुण्णाणं धम्मे उप्पज्जई मई ॥१॥ ५६१. अणुसोयपट्ठिए बहुजणम्मि पडिसोयलद्धलक्खेणं। पडिसोयमेव अप्पा दायव्वो होउकामेणं ॥२॥ ५६२. अणुसोयसुहो लोगो पडिसोओ आसवो सुविहियाणं। अणुसोओ संसारो, पडिसोओ तस्स उत्तारो ॥३॥ ५६३. तम्हा आयारपरक्कमेण संवरसमाहिबहुलेणं। चरिया गुणा य नियमा य होंति साहूण दट्ठव्वा ॥४॥ ५६४. अणिएयवासो समुयाणचरिया अण्णायउंछं पइरिक्कया य। अप्पोवही कलहविवज्जणा य विहारचरिया इसिणं पसत्था ॥५॥ ५६५. आइण्ण-ओमाणविवज्जणा य उस्सन्नदिट्ठाहड भत्त-पाणे। संसट्ठकप्पेण चरेज्ज भिक्खू तज्जायसंसट्ठ जई जएज्जा ॥६॥ ५६६. अमज्ज-मंसासि अमच्छरीया अभिक्खणं निव्विगईगया य। अभिक्खणं काउस्सग्गकारी सज्झायजोगे पयओ हवेज्जा ॥७॥ ५६७. न पडिण्णवेज्जा सयणाऽऽसणाइं सेज्जं निसेज्जं तह भत्त-पाणं। गामे कुले वा नगरे व देसे ममत्तभावं न कहिंचि कुज्जा ॥८॥ ५६८. गिहिणो वेयावडियं न कुज्जा अभिवायणं वंदण पूयणं वा। असंकिलिट्ठेहि समं वसेज्जा मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी ॥९॥ ५६९. न या लभेज्जा निउणं सहायं गुणाहियं वा गुणओ समं वा। एक्को वि पावाइं विवज्जयंतो विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥१०॥ संवच्छरं वा वि परं पमाणं बीयं च वासं न तहिं वसेज्जा। सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ ॥११॥ ५७१. जो पुव्वरत्तावररत्तकाले संपेहई अप्पगमप्पएणं। किं मे कडं ? किं च मे किच्चसेसं ? किं सक्कणिज्जं न समायरामि ?॥१२॥ ५७२. किं मे परो पासइ ? किं व अप्पा ?। किं वाहं खलियं न विवज्जयामि ?। इच्चेव सम्मं अणुपासमाणो अणागयं नो पडिबंध कुज्जा ॥१३॥ ५७३. जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं काएण वाया अदु माणसेणं। तत्थेव धीरो पडिसाहरेज्जा आइण्णो खिप्पमिव क्खलीणं ॥१४॥ ५७४. जस्सेरिसा जोग जिइंदियस्स धिईमओ सप्पुरिसस्स निच्चं। तमाहु लोए पडिबुद्धजीवी सो जीवई संजमजीविएण ॥१५॥ ५७५. अप्पा खलु सययं रक्खियव्वो सव्विंदिएहिं सुसमाहिएहिं। अरक्खिओ जाइपहं उवेई सुरक्खिओ सव्वदुहाण मुच्चइ ॥१६॥त्ति बेमि ॥ ॥ बीया चूलिया चूला समत्ता ॥

卐卐卐 ॥ बारसमं अज्झयणं समत्तं ॥१२॥

卐卐卐 ॥ दसवेयालियं समत्तं ॥卐卐卐

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org